ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

अक्टूबर-दिसंबर 2022, वर्ष : 6, अंक : 7-9

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

झंझावत से पार पावे के कवायद

–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/5

धरोहर

शुभ शुभ शुभ नया साल हो–
राम जियावान दास 'बावला'/6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

भोजपुरी माटी, भाषा आ हमार लेखन
–विजय कुमार तिवारी/29–30
कुक्कुर पर सिनेमा आ सिनेमा में कुक्कुर–मनोज भावुक/41–43
साँस–साँस में बाँस–केशव मोहन पाण्डेय/44–46

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

मलिकार–राजकुमार सिंह/17
मीठवा–डॉ सुशीला ओझा/18–19
यम द्वितिया–सन्नी भारद्वाज/20
दू गो लघुकथा– अशोक मिश्र/21
मानवता के राह–अशोक कुमार तिवारी/21
निर्जीव के गुलाम हो गइल बा–अभियंता सौरभ भोजपुरिया/22–23
कनेया–उमेश कुमार राय/30
बंधल जल–दिनेश पाण्डेय/35–36

• कविता/गीत/गजल

दोहा–देहात– सविता गुप्ता/16
रोपनी गीत– दिलीप पैनाली/23
उत्पाती मन– बिम्मी कुँवर/24
आखिरी अटल– सन्नी भारद्वाज/24
गीत–सुरेश कांटक/25
गीत–संतोष कुमार विश्वकर्मा 'सूर्य'/25

• कविता/गीत/गजल

छदमी बनल बा छांह–देवेन्द्र कुमार राय/27
गरीबी में लोग–राजू साहनी/27
शिकायत पेटी–चंद्रेश्वर/28
भाषा भोजपुरी के धज्जियाँ उड़ावता– दीपक तिवारी/31
चले के अब शहर से गांवे–राम बहादुर राय/31
तीन गो कविता– अंकुश्री/34
बनल बाबा पर बनल कविता–डॉ सुनील कुमार पाठक/37
तीन कविता–डॉ राजीव उपाध्याय/39
हमरै खातिर–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/40
हम न रहब तोहरे बिन–प्रोफेसर अखिलेश चंद्र/40

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

महेंदर मिसिरः ''गीत–संगीत का ढाल का संगे राज धरम निबाहे वाला मनई''के चरित्र के लेखा–जोखा ह–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/7–11
झनकि बाजे हो मन के भीतर के दरदिया–कनक किशोर/11–14
मोथा आ मूँज के जिद आ धार के गजल–डॉ बलभद्र/15–16
सचहूँ ' फेर न भेंटाई उ पचरुखिया/मीनधर पाठक/38

• संस्मरण/ साक्षात्कार

भोजपुरी लोकवार्ता के अनन्य साधकः
डॉ अर्जुन दास केशरी– रवि प्रकाश सूरज/32–33

■■

झंझावत से पार पावे के कवायद

सहजोग सहचर्य आत्मीयता जइसन शब्द सुने में साँचों नीमन लागेलें बाकिर एहनी क जमीनी हकीकत से कवनों नाता ना होला। एह शब्दन के परयोग करे वाला लो आपन–आपन कहानी सुना के कगरी हो जाला। एकरा जाल में उहे फंसेला जे जरूरत से जियादा उमेद बान्हि लेला। समय ओकरो के सही मोका पर साँच के गियान से रूबरू जरूर करा देला। ई देखे खातिर मनई के भितरि सबुर ध के बइठे के तागत होखे के चाही। एकरा सभे त ना देख–परख पावेला। अइसन अनुभव कइले कहीं केहू भेंटा जाव, त ओकर लाभ जरूर लेवे के चाही। गियानी–ध्यानी लोग के इहे कहानगी अजुवो बा। अब एकरा फायदा उठावल रउरा के बस के होखे त उठाईं, नाही त कतो ठाढ़ होके अपने मन के भड़ास निकालत रहीं।सुननिहार लो से भेंट ना होखी। भोजपुरी साहित्य सरिता के डेग कबों अपना गति का संगे आ कबों जरी–मनी थथम के आगु बढ़ रहल बा। परिस्थिति कबों–कबों कुछ रोकावट लेके आवत रहेले, ओकरा से उबरते फेरु आपन राह धइल अपना आदत में दूध–पानी लेखा मेझराइल बा।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

'विषकुंभम, पयो मुखं ' वाली स्थिति मने मीठ बोलवा वाला हाल सभे के बेहाल क देवेला। कुछ नीमन करे के परयास धरासाही हो जाला आ उछाह मरि जाला। एकरा से बेहतर त ई बात होखत कि सोझे केहु पल्ला झार लेत। आस दे के सांस घोंटल ढेर बाउर होला। हो सकेला कि इहे एह समाज के रीत होखे। समाज में होखला के मतलब समाज के जीयल, समाज के संगे जीयल आ ओहमें होखे वाला उंच–नीच से दू–चार होखल एगो सोझ प्रक्रिया ह। एकरा से होके कबों ना कबों सभे के गुजरे के पड़ेला, त भोजपुरी साहित्य सरिता कइसे बाच जाई।हमनियों के एह प्रक्रिया से गुजरनी सन आ ढेर कुछ समुझे–बूझे के भेंटइबो कइल। समुझ के दायरा बढ़ल आ आगु के रहता अंजोर भइल।

भोजपुरी साहित्य सरिता सम्पादन टीम कई बेर अंक के संगे न्याय त ना क पावेले बाकि हतास नइखे। उमेद बा कि अगिला अंक अपना पुरनका वैभव का संगे रउवा सभे के सोझा परोसे में हमनी के सफल होखब जा। अइसन कुछ बिसवास हमनी के रउवा सभे के नेह–छोह से भेंटाला। उमेद बा कि रउवा सभे आपन नेह बनवले राखब।

उछाह भरल बिसवास आ शुभकामना के संगे–
संपादक

■■

शुभ-शुभ-शुभ नया साल हो

बारल बयार ऋतुराज क सनेस देत
गोरकी चननिया क अँचरा-गुलाल हो
खेत-खरिहान में सिवान भरी दाना-दाना
चिरई के पुतवो ना कतहूँ कँगाल हो

हरियर धनिया चटनिया-टमटरा क
मटरा के छेमिया क गदगर दाल हो
नया-नया भात हो सनेहिया क बात हो
एहि बिधि शुभ-शुभ-शुभ नया साल हो

राम जियावन दास 'बावला'

जन्म – 1 जून 1922
मृत्यु – 1 मई 2012

■■

"महेंदर मिसिर : गीत- संगीत के ढाल का संगे राज धरम निबाहे वाला मनई" के चरित के लेखा-जोखा ह !

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

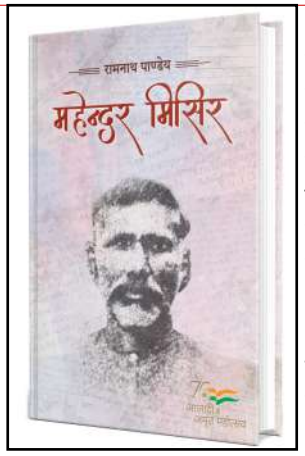

पूरबी के कालजयी गीतन के लिखनिहार मने पूरबी के जनक, भोजपुरी के पहलका महाकाव्य 'अपूर्व रामायन', प्रेम , विरह आ निरगुन गीतन के सिरजना करे वाला एगो अइसन मनई जे समाज आ देस के खातिर आपन सागरी जिनगी दाँव पर लगा देलस। जेकरा के आज भोजपुरी अस्मिता के प्रतीक का रूप में जानल– मानल जाला। बाकि ओकरा के ऊ अथान ना देहल जाला। बंगाल के सन्यासी विद्रोह के सहचर आ अंग्रेजन के राज क आर्थिक रूप से करिहाँय तूरे खातिर नोट छाप के सगरे सरकारी तंत्र के चूल्ह हिलावे वाले महेंदर मिसिर का संगे न्याय करत उपन्यास ' महेंदर मिसिर' जवना के रचनाकार पं रामनाथ पाण्डेय जी बानी । एह उपन्यास के संशोधित संस्करण 2021 में सर्वभाषा प्रकाशन से प्रकाशित भइल बाटे। उपन्यास के पढ़ला का बाद महेंदर मिसिर के जवन रेखाचित्र उभर के सोझा आ रहल बा , उ भोजपुरी के पहिल उपन्यासकार पं रामनाथ पाण्डेय जी के लेखनी के बेर बेर गोड़ छुवे ला उदबेगे लागता। ' महेंदर मिसिर' उपन्यास के पहिल संस्करण 1996 में आइल रहे आ ओह पर ओह घरी 'श्री राज मंगल सिंह' सम्मनो मिलल रहे, तबो आलोचक लोगन के दीठि महेंदर मिसिर का संगे न्याय करे में कोताही कइलस, जवना का चलते महेंदर मिसिर के जवन अथान भोजपुरिया समाज आ साहित्य में बने के चाहत रहे, ना बन पावल।

(महेंदर मिसिर के केंद्र में राखिके भोजपुरी में एगो अउर उपन्यास अदरणीय पाण्डेय कपिल जी के 'फुलसूंघी' बा। ओह उपन्यास के जे पढ़ले होखी आ ओकरा बाद पं रामनाथ पाण्डेय के उपन्यास 'महेंदर मिसिर' के पढ़ले होखी। ओह बेकती के दूनों उपन्यासन में गढ़ाईल महेंदर मिसिर के चरित सोझा नाच जाई आ दूनों के अन्तरो बुझा जाई । इहवाँ हम तुलनात्मक रूप में कुछो ना कहेम। रउवा सभे दूनों उपन्यासन के पढ़ी आ खुदे बुझीं , कि कहवाँ का खेला भइल बा।)

अब आगु बढ़े से पहिले कुछ महेंदर मिसिर के बारे में जान लीहल जरूरी बुझाता –

"बिहार, छपरा के काहीं–मिश्रवलिया गांव में 16 मार्च, 1886 के माता गायत्री देवी आ पिता शिवशंकर मिसिर के घरे जनमल महेन्दर मिसिर के भिखारी ठाकुर आपन गुरु मानत रहलन। मिसिर जी पहलवान रहनी। कसल देह रहे। धोती–कुर्ता पहिनी। गरदन में सोना के सिकड़ी आ मुंह में पान चबात रहीं। महेन्दर मिसिर के पत्नी के नाम परेखा देवी रहे। परेखा जी कुरूप रहली। त कादों एही का चलते गीत–संगीत में अपने मन के भाव उतरले बाड़ें महेन्दर मिसिर। हिकायत मिसिर एकलौता बेटा रहलें मिसिर जी के।

गीतन के कुछ बानगी देखीं–

(1) अंगुरी मे डंसले बिआ नगिनिया, ए ननदी दिअवा जरा दे ।

2) सासु मोरा मारे रामा बांस के छिउंकिया, सुसुकति पनिया के जाय,
पानी भरे जात रहनी पकवा इनरवा, बनवारी हो लागि गईले ठग बटमार।

(3) आधि आधि रतिया के पिहके पपीहरा, बैरनिया भईली ना,
मोरे अंखिया के निनिया बैरनिया भईली ना ।

4) पिया मोरे गईले सखी पुरबी बनिजिया, से दे के गईले ना,
एगो सुगना खेलवना से दे के गईले ना।

एह गीतियन के सुनते बहुते लोग बता सकेले कि एकर लिखनिहार महेंदर मिसिर जी बानी।

ढेलाबाई के कोठी में बनल शिव–मंदिर में 26 अक्टूबर,1946 के महेन्दर मिसिर एह दुनिया के अलविदा कह देलें बाकिर लोकमन में उहाँ के अथान अजुवो जस के तस बा। "

महेंदर मिसिर उपन्यास के रचना उपन्यासकार पंडित रामनाथ पाण्डेय जी के कहानगी का हिसाब से मोती बी ए जी के बेर बेर हुरपेटला के वजह से भइल रहे। कारन रहे कि महेंदर मिसिर जइसन भोजपुरी के धरोहर के

भोजपुरी साहित्य आ समाज में उचित अथान मिलो। काहें से कि महेंदर मिसिर के लेके समाज में कई तरह के भ्रांति पसरल रहल । जवना पर के गरदा उड़ावल जरूरी रहल। एही का चलते पंडित रामनाथ पाण्डेय जी कई बेर काहीं मिश्रवलियाँ के चक्करों लगवलें आ समुचित जानकारी जुटवलें। एकरा इतर उपन्यास खातिर काम करत बेरा समाज के ढेर लागन से मिललें आ ढेर भ्रांतियन से धूरा झारे में उहाँ के मदद मिलल। जवना के जिकिर उहाँ के अपने 'आपन सफाई' में कइलहूँ बाड़न। एह ऐतिहासिक उपन्यास ला जरूरी कल्पनों के सहारा लेले बाड़न। ओकर कुछ बानगी देखहूँ जोग बा–

'' डेरा मत, तूँ अपना के थोड़ा बदल दे। बेड़ा पार हो जाई। भगवान राम कावरी थोड़ा झुक जा। उनकर कथा कहै। उनकर गीत गावै।''

हनुमान जी का संगे उनकर ई साक्षात्कार भोजपुरी के पहिल महाकाब्य 'अपूर्व रामायन' लिखे क बिरवा नायक महेंदर मिसिर के मन में उपन्यासकार डाल दीहलें। कहीं न कहीं ई साक्षात्कार तुलसी दास के इयादो ताजा करा रहल बा।

''चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर
तुलसी दास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुबीर।''

इहों हनुमान जी प्रेरित क रहल बाड़न। आ तुलसी बाबा के रामचरित मानस लिखे क ऊर्जा मिलल। ठीक इहे स्थिति 'अपूर्व रमायन' ला महेंदर मिसिर के बा। अब आईं अइसन कुछ अउर बातन पर नजर डालल जाव, जवन पंडित रामनाथ पाण्डेय जी के एगो पारंगत उपन्यास कार होखला के चिल्ला चिल्ला के सबूत दे रहल बा। एक बेर फेर से हम रउवा सभे के धियान रामचरित मानस का ओर ले के चलल चाहत बानी–

बाली बध के बाद रामचरित मानस के नायक 'राम' क चरित तनि कमजोर पड़त देखाए लागल, तुलसी बाबा तुरते राम से कहवा देलन–

''अनुज सुता भगिनी सुत नारी / सुनू सठ कन्या सम ये चारी।
इनही कुदृष्टि बिलोकहीं जेही/ तिनके बधे कछु पाप न होई॥ ''

अब आईं ' महेंदर मिसिर' उपन्यास पर, जब ढेला बाई आ केसर बाई से भइल अपमान का चलते नायक महेंदर मिसिर के चरित कमजोर पड़त देखाए लागल त पं रामनाथ पाण्डेय जी काशी के दर्शन करावत, ओकर महिमा बतावत कबीर बाबा आ रैदास जी के अतमा से नायक के साक्षात्कार करा देलन आ नायक के ओकरे सही राह पर चले खातिर प्रतिबद्ध क देलन।

उपन्यास ' महेंदर मिसिर' के नायक उदार मन के रहलें, उनुका से ओकरो दुख न देखल जात रहे जेकरा से उ नराजों रहस। तबे नु बिद्याधरी बाई से केसर बाई के बेमारी आ लकवा मरला के बात सुनि के उनुका के काठ मार देलस आ केसर बाई तक आपन सनेसा भेजे खातिर गंगा माई से विनती करत गावे लगलें–

सासु मोरे मारे राम बाँस के छिउंकिया
ए ननदिया मोरी रे, सुसुकत पनिया के जाय।
गंगा रे जमुनवा के चिकनी डगरिया
ए ननदिया मोरी रे, पऊंवा धरत बिछिलाय।
छोटे मोटे पातर पियवा हँसी के ना बोले
ए ननदिया मोरी रे, सेहो पियवा कहीं चलि जाय।
छोटे मोटे जामुन गछिया फरे न फुलाय
ए ननदिया मोरी रे, सेहो गछिया सूखियो ना जाय।
गावत 'महेंदर मिसिर' इहो रे पुरुबिया
ए ननदिया मोरी रे, पिया बिनु रहलो न जाय।

उपन्यासकार पं रामनाथ पाण्डेय भारतीय परम्परा के पोसक आ धरम में असथा राखे वाला बेकती रहलें। एकर झलक देखे खातिर बस एक गो बात हम राखल चाहेम कि उपन्यास के नायक 'महेंदर मिसिर' के अपना मउवत के आभास जइसही भइल, उ एगो निरगुन गावे ला मंच सजवा के सभे के जुटा लेलन। गीत खतम होते उहाँ के गोलोक चल गइलन। हिन्दू भा वैदिक परम्परा में अंतिम बेरा में भगवान के सब ईयाद करेला। उपन्यास के नायको से ई काम पाण्डेय जी करवा देलन। देखी–

एकहू गहनवा नइखे सारी
हो कइसे जाईं ससुरारी।
खेलत रहनी हो सिपुली– मउनिया से,
आई गइलें गवना के नियारी।
बाबा घरे रहितें, मोर भइया घरे रहितें,
त फेरि देते डोलिया कहारी।
नाही मोरा लूर ढंग,एको ना रहनवा,
पिया हमसे करिहें पूछारी।
मिलि–जुलि लेहु सभ संग के सहेलिया,
करी लेहू भेंट–अंकवारी।
कहत महेंदर सुनै संग के सहेलिया,
छुटि गइलें बाबा के दुआरी।

उपन्यास 'महेंदर मिसिर' के आमुख लिखत बेरा आदरणीय (डॉ) भगवती शरण मिश्र जी के ई बाति धियान देवे जोग हवे – '' महेंदर मिसिर स्वतन्त्रता के इतिहास के एगो उपेक्षित पात्र रहल बाड़न, जबकि उनुकर योगदान भारतीय आजादी के इतिहास में कम नइखे। महल के चमकत कंगूरा त सब लोग देखेला, नेंव में चल गइल ईंटा प केकर धेयान जाला ? महेंदर मिसिर अइसन कतना

लोग नेंव के पथल बन गइल। ऊ लोग के चमका के हीरा बनावे वाला लोग के भारी कमी बा। श्री रामनाथ पाण्डेय जी इहे कइले बानी। कम से कम एगो नेंव के पथल के बढ़िया से तरास के हीरा त बनाइये देले बानी।''

जहाँ तहाँ ठेठ भोजपुरी के ठाट एह उपन्यास के बनावट– बुनावट में चार चाँद लगा रहल बा। कुछ अइसने कहनाम आदरणीय (डॉ) भगवती शरण मिश्र जी के बा आ एकरा पक्ष में कुछ उदाहरणो रखले बानी, जवन एही उपन्यास से बा। रउवो देखीं–

' भाला छतिया के जब महेंदर मिसिर निसाना साधस, त लोग डरे बनउरी अइसन एक–दोसरा पर पटउर पड़ जाय। लोग सँभार के उठे–उठे तले दोसरको ओरी इहे लीला। '

'पापी–से–पापी के काया के कांचन करत इनका मन में कबहीं ई भाव ना उपजल कि हम पतित पावनी हईं । लोग भले उनुका के पतित–पावनी कहत होखे। लोगन के कुकर्म के अपने अंगीकार भले कइलीं, बाकिर केकरो पर कबही एहसान ना लदली। बस एह धरती पर आ के अपना के कई साखा–उपसा खा में बाँट के छितरा देली आ खूब जोर से खिलि खलात समुंदर में अमा जाली।'

'महेंदर मिसिर' उपन्यास में उपन्यासकार पं रामनाथ पाण्डेय जी के दार्शनिको रूप के दर्शन भइल बा। कई विद्वान लोग कहेला कि लेखक के दार्शनिक होखल उचित ना होला बाकि इहाँ पाण्डेय जी के लेखन में लउकत बा। बाकिर ऊ लेखन पर हावी नइखे होत। देखीं–

' विश्राम आ लक्ष्य के प्राप्ति के प्रयास में तनिको मेल नइखे। विश्राम के चाह आदमी के अपना लक्ष्य से दूर हटा देला आ विश्राम के त्याग आदमी के अपना लक्ष्य के पास पहुंचा देला।'

कउनो कथा, कहानी भा उपन्यास में जवन सभले खास होला, उ ह कथ्य, कथोपकथन, भाषा आ शिल्प । एह कुल्हि कसौटी पर ई उपन्यास मील के पथल बा,एहमे संदेह नइखे। एकरा संगही चरित्र चित्रण एगो अइसन अंग होला, जवन कथा, कहानी भा उपन्यास के दसा–दिसा तय करेला, मने नीमन चरित्र – चित्रण कथानक के उच्च श्रेणी में खड़ा क देला। एह उपन्यास में केहुओ के चरित्र के संगे अन्याय नइखे भइल। उपन्यास के नायक महेंदर मिसिर , जमींदार हलवन्त सहाय , स्वतन्त्रता सेनानी अभयानन्द आ ढेला बाई के संगही गंगियो के चरित्र नीमन से उभर के सोझा आइल बा।कहानी के बहाव गंगा माई के बहाव लेखा बा बेलौस, कतों बाधित होत नइखे देखात। ई पं रामनाथ पाण्डेय के लेखन के ढेर खास बना रहल बा।

कथानक में महेंदर मिसिर के चरित्र के दू गो रूप उभर के सोझा आवता, संगीत साधक आ स्वतन्त्रता सेनानी। पूरे उपन्यास में एह दूनों के चाल एक–दोसरा अगल–बगल होइयो के एक दोसरा से स्पर्धा करत नइखे देखात। बलुक एक–दोसरा के पूरक लेखा बा। कवनों एक रूप में नायक के मूल्यांकन नायक के संगे अन्याय होखित बाकि अइसन कुछ इहाँ नइखे भइल।

अब जवन बात विमर्श के जोग बा ओकरो आज चरचा होखल जरूरी बा। महेंदर मिसिर के चरित्र पर लोग दू कारन ले के अंगूरी उठावेला– जाली नोट छापल आ ओकरा चलते जेल के जिनगी जीयल आ दोसरका बाई जी लोगन के कोठा पर आइल–गइल। अब पहिले जाली नोट छपला के लेके जवन निरर्थक विरोध लोग करेला,उ अज्ञानते कहल जा सकेला काहे से कि ओकर परयोग महेंदर मिसिर अपना सोवारथ में कबों नइखे कइले। एह बाति के प्रमाण उनुका परिवार खुदे बा जवन ओह घरी जमींदार परिवार रहल बा। जहाँ कवनों सुख–सुविधा के कमी नइखे रहल। ई पक्ष उपन्यासकार बखूबी से उकेरले बाड़न। संगही इहों जानल जरूरी बा कि बंगाल के संन्यासी आन्दोलन के प्रभाव रहे मिसिर जी पर। उनका देशभक्ति के धुन सवार हो गइल आ ऊ अंगरेजन के उखाड़ फेंके खातिर आ क्रन्तिकारियन के मदद खातिर जाली नोट छापल शुरू कर दिहलें। अंगरेजन के कान खड़ा हो गइल। उ खुफिया तंत्र के जाल बिछा देलन स। सीआइडी के जटाधारी प्रसाद आ सुरेन्द्र नाथ घोष के अगुवाई में खुफिया तौर–तरीका से छानबीन चलल। जटाधारी प्रसाद त गोपीचंद बनि के तीन बरिस ले मिसिरजी के संघतिया आ नोकर रहले आ भरोसा जीति के घात कर देलें। 16 अप्रैल, 1924 के रात में नोटे छापत में नोट के गड्डी आ मशीन का साथे महेन्दर मिसिर आ उनका चारो भाई के गिरफ्तार करवा देलें। बाकिर संजोग से महेंदर मिसिर ओह घरी सूतल रहलें, एही से उनुका सजा में रियाइत भइल रहे। एह बाति के तसदीक संसद सदस्य रहि चुकल स्वतंत्रता सेनानी बाबू रामशेकर सिंह आ श्री दइब दयाल सिंह जइसन लोग मनले बा कि मिसिर जी के घर क्रांतिकारी लोगन के अड्डा बनि गइल रहे।

असली बात त इ रहे कि नोट छापे के काम आपन सुख के खातिर ना बलुक अंगरेजी राज के इंतजाम चउपट करे खातिर शुरू भइल। जवन एह गीत से ठीक बुझा रहल बा जवन जटाधारी मने गोपीचंद कहले बाड़न –

नोटवा जे छापि–छापि गिनिया भजवलऽ ए महेन्दर मिसिर
ब्रिटिश के कइलऽ हलकान, ए महेन्दर मिसिर
सगरे जहनवां में कइलऽ बड़ा नाम, ए महेन्दर मिसिर
पड़ल बा पुलिसवा से काम, ए महेन्दर मिसिर!

बाकिर महेंदर मिसिर अइसन काहे कइलन। अपना गीत में बतावत बाड़न –

'हमरा नीको ना लागे राम, गोरन के करनी
रुपया ले गइले, पइसा ले गइले, ले गइले सब गिन्नी
ओकरा बदला में त दे गइले ढल्ली के दुअन्नी
हमरा नीको ना लागे राम, गोरन के करनी

अब दोसरकी बाति – जवन बाई जी लोगन के कोठा पर गइला के लेके लोग उठावेला। महेंदर मिसिर बाई जी लोग के कोठा पर एगो संगीत साधक के रूप में जात रहन। उनुका केसर बाई, बिद्याधरी बाई भा ढेला बाई से प्रेम भइलो रहल बाकि ओहमें वासना के अथान ना रहे।

सभे ले मजगर बात जवन डॉ मुन्ना कुमार पाण्डेय अपना कथ्य में लिखत बाड़न – '' महेंदर मिसिर भोजपुरी प्रांत आ भाषा के सबसे लोक प्रसिद्ध आ सम्मानित नाम बाड़ें बाकिर एगो बड़ दुर्भाग्यो उनका संघे जुड़ल बा। जवन आदमी पूरबी के जनक मानल जाला आ भोजपुरिया समाज , साहित्य आ संस्कृति में एगो बड़हन नाम बा , जनता के दिल आ जुबान पर ओकर गीत बसल बा आ जेकरा से ओकरा समय के सब कलाकार , साहित्यकार प्रभावित रहे आ जउन आदमी राष्ट्रीय आंदोलन के ना मालूम केतना सिपाही लोग के मदद कइलस, उ पता ना कवना साजिस भा दुर्भावना से जाने–अनजाने मुख्य धारा के साहित्य आ संस्कृति से कगरिया दीहल गइल।''

कतों न कतों डॉ मुन्ना कुमार पाण्डेय के एह बाति से सहज इत्तेफाक हो जाला कि ''सारण के एगो ब्राह्मण परिवार में जनम लेके लीक से अलगा हट के भोजपुरी कला कर्म आ काव्य के एगो व्यापक फलक तक पहुँचइलें। लोक कहावत '....लीक छोड़ तीन चले शायर, सिंह, सपूत' मिसिर जी पर पकिया बइठेला। उहाँ के लीक छोड़िए के चलल रहनी ओहिसे एगो रहस्यमयी, मिथकीय चरित्र बन गइनी। ''

ई बाति केहुओ के सोचे के मजबूर कर सकत बा कि महेंदर मिसिर के संगे अइसन अन्याय काहे? महेंदर मिसिर के संगे ई अन्याय पहिलहूँ भोजपुरी के सभे इतिहास लिखे वाला लोग कइले बा आ हलिए प्रकाशित डॉ सुनील कुमार पाठक जी के किताबि ' छवि और छाप' तक ई अन्याय रुकल नइखे।

ई एगो अजबे इत्तफाक बा कि भोजपुरी के महान आलोचक महेश्वराचार्य जी के लिखल एगो निबंध में उहाँ के लिखले बानी–'जे महेंदर ना रहितें त भिखारी ठाकुर ना पनपतें। उनकर एक एक कड़ी लेके भिखारी भोजपुरी संगीत रूपक के सृजन कइले बाड़न । भिखारी के रंग कर्मिता, कलाकारिता के मूल बाड़न महेंदर मिसिर जेकर उ कतही नाम नइखन लेले। महेंदर मिसिर भिखारी ठाकुर के रचना गुरु, शैली गुरु बाड़न। लखनऊ से लेके रंगून तक महेंदर मिसिर भोजपुरी के रस माधुरी छींट देले रहलन, उर्वर बना देले रहलन, जवना पर भिखारी ठाकुर पनप गइलन आ जम गइलन।'

अब ई देखल जाव कि हेतना कुल्हि बातिन के हेर के , जुटा के, सहरिया के एह किताबि में परोसे वाला डॉ मुन्ना कुमार पाण्डेय ओही डर के शिकार हो गइल बाड़न, जवना के ऊ अपने भूमिका में जोरदार ढंग से उठवले बाड़न। ऊ डर कतना बरियार बा कि उदय नारायण तिवारी से शुरू होत कृष्ण देव उपाध्याय से गुजरत डॉ सुनील कुमार पाठक तक सभे नोनाह भीत लेखा महेंदर मिसिर के नाँव पर भहरा गइल बा। अइसना में डॉ मुन्ना कुमार पाण्डेय के कुछो ना कहल जा सकेला। ऊ डेराते सही ढेर कुछ कह गइल बाड़न, जवना से असल बात बूझल कठिन नइखे। महेंदर मिसिर के लेके जवना डर के बाति डॉ मुन्ना कुमार पाण्डेय जी उठवलें, पड़तालों ठसक के संगे कइलें बाकिर खुदो ओहमें चभोरा गइलें। ओह डर से पाण्डेय कपिल जी ठीक ठाक डेराइल बाड़न नाही त 'फुलसुंघी' जइसन कृति के कपोल कल्पना ना कहितें। भलही उहाँ कुल्हि चरित्र का संगे ठीक से न्याय नइखे भइल।

कई गो अउर किताबि महेंदर मिसिर पर बा, पंडित जगन्नाथ के 'पूरबी पुरोधा' अउर जौहर सफियाबादी के 'पूरबी के धाह' का संगे प्रसिद्ध नाटककार रवीन्द्र भारती के 'कंपनी उस्ताद' नाँव से, साहित्य अकादमी से प्रकाशित भगवती प्रसाद द्विवेदी के लिखल 'भारतीय साहित्य के निर्माता 'महेंदर मिसिर' जरूर बा। ढेर लोग लिखलहूँ बा, बाकिर लोग मूल मुद्दा से किनारा क गइल बा भा डर के असर ओहिंजों काम कइले बा। नाही त

कनक किशोर

झनकि बाजे हो मन के भीतरी दरदिया

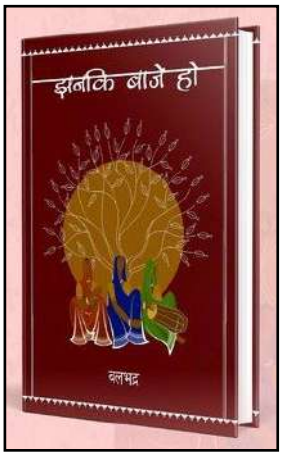

सरल व्यक्तित्व के स्वामी बड़ो आ गंभीर बात के बड़ा सहज ढ़ंग से एह तरे सामने रखेला कि ऊ अपना जइसन, अपना जोरे घटल घटना, अपना घर परिवार के कहानी जस लागेला। बल. भद्र के ' झनकि बाजे हो ' छोट काया, बढ़िया कलेवर में एगो सुंदर कथेतर गद्ध संग्रह हाले में आइल बा जवना में उनुकर बारह गो रम्य रचनाध ललित निबंध सामिल बा।हम ओह में से कुछ रचना के आत्म कथात्मक संस्मरण के श्रेणी में रा खल चाहब काहे कि संस्मरण के सामाजिक जामा पहिरा के नया रूप में राखल गइल बा। बलभद्र खुद कहले बाड़न कि एह संग्रह में आपन भाषा में आपन बात, अपना गाँव– घर के बात,खेत– खरिहान के बात,लोग – बाग के,कोइल – काग के,पंडुक आ भुचेंगा के,नेह – नाता के,दुख – तकलीफ के,गावे – बजावे के,जूझे के बात । बात अपना समय के, अपना समाज के, आर्थिक हालात के, राजनीति के,लोक संस्कृति के बात रखल गइल बा। बलभद्र गाँव के कवि, किसान के कवि, मजदूर के कवि,आम आदमी के कवि हवन ,गाँव, घ ार, किसान, मजदूर, मेहरारू, माटी आ आम आदमी के दरद के नजदीक से देखले बाड़न किताबि के पन्ना में ना बलुक गाँव के माटी में रचत – बसत।ऊ दरद गाँव से ले आइल लेवा जस उनुका साथे आजुवो जुड़ल बा ओकर प्रमाण उनुकर साहित्य संसार बा चाहे ऊ गीत,कवित भा कथेतर गद्ध होखे। ' झनकि बाजे हो ' के बारहो रचना ऊपर लिखल बातन के गवाही बा।लेखक के सब रचनन के भाषा के लय – ताल में गंवई सुगंध त बसले बा, पाठक के ताल टूटे ना के तर्ज

आजु जे लोग भिखारी ठाकुर के भोजपुरी के पर्याय मान रहल बा, ऊ लोग अइसन ना क पाइत। अगर महेंदर मिसिर के मूल्यांकन न्याय का संगे भइल रहित भा एकेडमिक रूप से सविकारल गइल रहित त उनुको पर शोध त भइले रहित आ महेंदर मिसिर के भोजपुरी साहित्य में अछूत न मानल जाइत।

सर्वभाषा ट्रस्ट से जवन ई संवर्धित संस्करण 'महेंदर मिसिर' उपन्यास के आइल बा, ऊ एक बेर जरूर हलचल पैदा करे में सफल होत देखात बा।जवना के बारे में अपना प्रकाशकीय में केशव मोहन पाण्डेय एह एतिहासिक उपन्यास 'महेंदर मिसिर' आ लिखनिहार श्रधेय पं रामनाथ पाण्डेय जी ला कहले बानी –'इतिहास के एगो तोपाइल आ सबसे चमकदार पन्ना पर पड़ल धूरा के बड़ा आदर से झार झार के साहित्य आ समाज के सोझा ले आइल बानी।' ई हलचल ऊंच लहर बनि के महेंदर मिसिर के उचित स्थान दियावे में सफल होखे, ई हमार मनोकामना बा। अतने भर ना बलुक एह उपन्यास के सिरजना जवना उमेद से भइल रहे, उहो एक दिन सार्थक होखे, इ भाव हरमेसा मन में बनल रही।

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

तक गाँवन में ई सब भरपूर रहे।समय के साथ गाँवो बदलल बा तबहूं आजुवो गाँव–घर, गोतिया – दयाद, खेत –बधार में गंवई गंध भेंटा जाला अउर मनवा पुरनका दिनवा के इयाद करत भूला जाला गाँव के माटी में।टभकल पीर के इयाद दिआवेला आ टुभुकल गाभी मारेके,बोल बोले के,काँव– कीच करे के।दूनो दू जगहा के चीज ह बाकिर गंवई संस्कृति में एके जगह भेंटा जाला।लेखक ' टभकल से टुभुकल ले ' में लइका होखला पर गाँव में होखेवाला एगो छोट आयोजन के माध्यम से ठेठ गंवई अंदाज में एह बात के बड़ा सुनर ढंग से रखले बाड़े। एगो गर्भवती मेहरारू के पीर एह गीत के माध्यम से रखल गइल बा।

डाँड़ मोरा बथेला लहालह,ओदर चिलिख मारे हो
ए महादेव! मरलो पँजरिया के पीर
तो धगड़िन बोलावहु हो।

ओहिजे लइकिन के मुँहे उठावल गीत समाज में बेयापत दहेज के बात उठा के सोचे पर मजबूर कर देता।

बाप माँगे रोपइया बेटा माँगे मोटरसाइकिल
मोटरसाइकिल करनवे लइकी लोग कुँआर परल बा।

ढोलक ताल,गीत गवनई के बीच गूँजत हँसी– ठिठोली,बोलबाजी,ताक – झाँक,काँव – कीच देखत बनत बा ' टभकल से टुभुकल ले ' में, उहो खुला अंदाज में बिना छोट बड़ के भेद – भाव के।

' बिरह से जिरह में ' लेखक आज के लइकिन के मनोदसा आ ओकरा भीतर खुला आकास के खोज में बइठल चिरई के बात रखले बाड़न।इहे नूं आज के स्त्री विमर्श ह। भोजपुरिया संस्कृति में पल – बढ़ रहल लइकिन काल तक भले बिरह में जियत रही सं बाकिर आज खुलके देहरी के बाहर आ जिरह करे के स्थिति में बाड़ी सं। समाज में मरद के सोच आजुवो नइखे बदलल बाकिर समय के माँग बा,बदले के होई मरदो के आ समाजो के। रचना में उद्धरित एगो गीत देखीं।

तोर मन बसे कि ना रे सँवरका
मोर मन बसेला तोरा में
चाहे मराइब चाहे कटाइब
चाहे कसाइब बोरा में।

एह में एगो जूनून,एगो फैसला सुनात बा। संस्कार के देहरी पार क के बोलत एह आवाज में समाज में काल्हु के अनबोलता के बोल कह रहल बा हमनी खातिर कोइल,सावन, फागुन,बिरह के बात अब पीछे छूट गइल बा। एगो दूसर उद्धरित गीत

आग लेबे गइलीं सिरिस तर माई
जोगिया बजावे उहाँ बंसी सुन माई
बँसिया के धुनिया सोहावन लागे माई
अस मन करे हम जोगिए संगे जाई।

लइकी के एहिजा मन, ओकर पसन,ओकर इच्छा लउकता। लइकी के भीतर कवनो द्वंद नइखे।भले समाज खातिर ओकर चाह चउंकावे वाला बा बाकिर इसारा बा कि ऊ रहल चाहतिया अपना मन संगे। अपना मन के चाह आ दुख अपना भीतर मारल नइखे चाहत।ऊ अब खुला आकास खोजतिया उड़ान भरे खातिर।ना सुनब त तइयार बिया जिरहो खातिर। रचनाकार बिरह के बाति छोड़ि जिरह प धेयान देवे के वकालत रचना में करत नजर आवत बाड़न।इहे समय के माँगो बा।

'' पिछिला एतवार के गइल रहीं बिहिया बाजारे।आग लागल बा सगरो बाजार में।दस कम सई रोपेया लेके।आँट ना आइल।कतनो हाय–हाय क के खटीं,कतनो पेट – गाँड़ जारीं,जाँत – खोंत के चलीं – आँट नइखे आवत।'' महँगाई प एगो मजदूर के व्यथा लेखक ' समय के साँचा में ' रखले बाड़न जे खेतिहर मजदूर के दारूण दसा अभिव्यक्त कर रहल बा।ओहिजे कार्यालय में व्याप्त घूसखोरी के बयान करत लिखत बाड़े '' के पुछवइया बा? के सुनवइया बा? मिलत त बा बीस हजार रूपइया,इनिरा आवास के।केकरा से कहीं?कहँवा से पाईं हजार – डेढ़ हजार जे घूस थमाईं ? बे दिहले त दुरदुरा देत बाड़न सं।एगो सवांगो बाड़न त उनका फुरसत ना।ब्लाक के चक्कर काटस कि मजूरी करस।'' बातो सही बा मजदूर आपन पेट भरे कि पेट काटि साहेब सूबा के घूस देवे।समय के साँचा में ऊ चाहियो के नइखे ढ़ल पावत।ओकर पेट आ रोटी के सवाल के हल मिलो तब त ऊ समय के सोचो।

साल में बारह महीना होला बाकी फागुन,चइत आ सावन हटा देल जाय त जिनिगी में कतना रंग– रास बाची, गंवई संस्कृति के सुगंध कतना बाची ई केकरो से छुपल नइखे। ' बाकी चइत के झकोर जनि माँगऽ' में लेखक फागुन आ चइत के विविधता आ उल्लास से त परिचय करावते बाड़न साथ हीं फगुआ,चइता के लय –ताल, धुन,गाँव के रीति – नीति, खेत – बधार के हाल,गँवई जिनिगी के चाल,आपस के बात –विचार, किसान आ मजूर के मनोभाव , किसान के दरद पर बड़ा खुल के आ बेवाकी से आपन बात रखले बाड़े जे गँवई माटी के साँच

है।तनि लेखक के शब्द में किसान के पीर देखीं।

'' जे देश – दुनिया के अन्न देला – आपन रंग में रंग देवे के कूबत राखेला – जे मौसम के मतलब बूझेला – एह सोगहग समाज के हालत आज ठीक नइखे।एह समाज के साथे क्रूर मजाक कइल जा रहल बा।ई बेवस्था एह समाज के हित के अनदेखा कर रहल बिया। आपन उपेक्षा कबले सही!ई हिस्सा खड़ा हो रहल बा। आपन हक अधिकार खातिर आवाज उठा रहल बा। फागुन के रंग आ चइत के झकोर बेकार ना जाई।धूर से गुलाब तक के हउवे ई सफर।गावे से ललकार तक के।''

सुख आ दुख साथे चलेला आगे पीछे बाकी गाँव के माटी में रचल बसल मनई के याराना पीर से अधिका बा तवनो पर हार माने वाला जीव ना ह फागुन के रंग आ चइत के झकोर से जिनिगी के रंगे रचे के कोसिस से बाज ना आवे।एह रचना में एकर सजीव वर्णन मिलत बा।

ताल आ ताव के जुड़ाव जिनिगी के आधार ह।ताव चढ़बो करेला,उतरबो करेला,दियइबो करेला, खाइलो जाला,ताव बूझलो जाला। ओसहीं ताल ठोकलो जाला, देलो जाला,बूझहूं के पड़ेला।ताल आ ताव समय से जुड़ल रहेला।' ताल छूटे ना ' में लेखक कह ताड़े ' सहर होखे भा गाँव – एही ताव आ ताल पर साधारण आदमी के सँउसे जीवन नाचत रहेला।' बातो सोरह आना साच बा। सामाजिक विषमता आपसी खाई बढ़ा रहल बा। समरसता के जगह समाज में फइलल विषमता के तरफ नजर रखत लेखक कह रहल बाड़न कि ' धनवान धन जमा करे के उतजोग में होले आ किसान मजूर आपन अकुलहट। जतने धनी बाबू लोग के धन बढ़ियाला ओतने गरीब के आकुलहट।अकुलहट ओकर आपन पूंजी है जेकरा बूते ऊ बाबू – बबुआन, मालिक – मोख्तार लोग के औकात नापे के ओर बढ़ेला।जतने जुलुम बढ़ेला, मुक्ति के जरूरतो लोग ओही अनुपात में महसूस करेला।' ई बात समाज के समझे के होखी आ समाज में बेयापत अकुलुहट के कम करे के पड़ी, सुख – दुख बाटे के पड़ी। बदलत गाँव के तस्वीर देख लेखक के चिंता हो जाता आ कह रहल बा ' शहर के चमक गाँव के अपना गिरफ्त में ले लेले बा।शहर गाँव में आ रहल बा,शहरी जीवन मूल्य गाँव में दखल जमा रहल बा।' लेखक के चिंता वाजिब बा आ मन में डर बा एह तरह से बढ़त शहरी दखलंदाजी गाँव के निगल मत जाय।लेखक सहर के मध्य आ नीचे तबका के लोगिन आ प्रवासी के दरदो के बड़ा सहज आ सुनर ढ़ंग से रखले बाड़न एह रचना में। समाज में बढ़त दलाली आ घूसखोरी के आज एगो स्थापित प्रक्रिया हो गइला पर बात करत लेखक नजर आ रहल बाड़न।बाकिर लेखक के भरोसा बा मेहनत के राग छिड़ी आ नयका तराना गूंजी कि भइया ताल टूटे ना।

' अँटका में परल बसन्त ' में लेखक गाँव– घर, खेती – बारी, रीति – नीति के बदलत चाल संगे भागत बसन्त के रूप देखि, डिजिटल बसन्त के गाँवों में घुसत देख चिंतित नजर आ रहल बा। आदमी के बदलत जीवन शैली में रूहचूह बसन्त कहीं भेंटाइयो जाता त मन उदास रहता। प्रकृति में बसन्त कम बेसी हेर फेर में लउक जाता बाकी आदमी के बसन्त त भागल जा रहल बा अँटका में।कारण बा बेरोजगारी, महँगाई, भ्रष्टाचार, तिकड़मबाजी के जबरदस्त मा.र।ई हम ना रचनाकार कह रहल बा जे देख रहल बा आदमी के माथ पर रखल समस्या के बोझा के।माथ भारी रहेला त कुछुवो नीक ना लागे आ रोकलो प माथे हाथ चलिए जाला। बाहरी खाद बिया बले बधार हरियर पियर लउकतो बा त चिरई चुरंग,मधुमाखी,कउवा,कोइलर नदारद।ई साफ बता रहल बा कि प्रकृतियो के बसन्त अँटका में परल जा रहल बा,बढ़ल जा रहल बा।लेखक के चिंता वाजिब बा तब त कह रहल बाड़े कि मॉल कल्चर पसर रहल बा।ई कल्चर हमनी के जीवन आ समाज में अन्हार बो रहल बा। मस्ती के नांव पर आत्महीनता, खोखलापन,बजारू बसन्त। आसावादी लेखक मन तबो साफ कह रहल बा कि बसन्त ठस्स ना होखे।मुई ना भले रूप बदले।चलल चलि आवत बसन्त के बूझ के बचावे के संदेश देत एगो नया बसन्त के कामना करत बाड़े।

ना पहिले वाला धान,ना पहिले वाला किसान। बाकी एगो चीज आज ले ना बदलल। किसान के आ मजूर के माली हालत।एह लोग के उपेक्षा के क्रम कबो ना टूटल।एह लोग के कष्ट के,एह लोग के पीर के ना तब कवनो ओर रहे ना अब कवनो छोर बा।' लेखक के ' पीर हउवे जहँवा के पहचान ' में कहल बात के प्रमाण खोजे के जरूरत नइखे, जरूरत बा किसान मजदूर के काल्हु आ आज के जिनिगी पर नजर डाले के उहो एसी चेंबर में बइठ के ना,ओहनी के बीच रहिके,ओहनी के पीर देखिके।' किसान –मजूर के थाकल – थहराइल जिनगी – एह शासन आ सरकार के सबसे बड़ उपहार।एह लोग के हर माँग के जबाब में लाठी – गोली।नीचे धरती ऊपर आकास।' बहुत कुछ कह जाता सत्ता के बाकी के सुनवइया

बा। अपना पीर के छाती से साटि जियत बा आ आगहूं जीही आस के हौंसला जिन्दा बा माटी के लाल में।

' झनकि बाजे हो धनि खेते – खेते चुरिया ' शीर्षक भले मन में रोमांस के लहर उठावत तन मन रोमांचित कर देता बाकी आरि से उतरते खेत में दरार देखि मन करूआ जाला ओसहीं रचना में घुसते ध ानि(मेहरारू) के पीर देखि मन करूआ जाता।एह करूआहट के दोष ओकनी के विधाता के दे जाली सं बाकी दोषी समाज बा जेकरा पर पुरूष बर्चस्व कायम आजुवो बा।मेहरारून के दसा प लेखक लिख रहल बाड़न ' औरतन के त कतहूँ आ कबहूँ चौन ना।ना दिने ना राते। खेत – खरिहान से फुरसत मिलल त चूल्हा – चउका आ साथे – साथे लरिका – फरिका।ढेंका से उतरे त जाँत धरे।', ।रूप भले बदल गइल होखे औरतन के दसा आजुवो कम बेसी इहे बा।औरतन के श्रम गीत,समय के साथ बदलत सोच, प्रवासी पति से वियोग – संजोग के बड़ा सुन्दर ढ़ग से वर्णन मिलता जेकरा में दुख – सुख, मेहनत – मशक्कत,हँसी– मजाक, नोंक –झोंक सब एक जगह देखल जा सकेला।' एह जमीन के दरद के मरम जब तक ना बूझल जाई,जब तक ई जमीन अपना बल – बूते ना खड़ा होई,ई दरद रहले रही।' अंत में साफ कर देत बाड़न कि जे बदलाव के राह ना अपनाई,ई जमीन साफ – साफ कह दी– ' तू ना माई के ना मेहरी के '। स्त्री विमर्श पर ऐकरा से बड़ बात का होखी।

एकहवा, लेवा आ ढूँढ़न हम आइब के हम आत्म संस्मरणात्मक आलेख कहल चाहतानी एह से कि ले खक अपना संस्मरण के सामाजिक जामा पहिरा के सामने रखले बाड़े। एकहवा में अपना गाँव के एगो बरियार झखाड़ आम के गाछि के बहाने गाछ वृक्ष के महत्व,ओकरा कट गइला के दुख,गँवई जिनिगी के ओकरा से लगाव आ पर्यावरण संरक्षण में योगदान पर भरखर बात करत बाड़न।साथ ही वन विभाग के वृ क्षारोपण के कागजी खानापूर्ति आ अलाय बलाय गाछ बिना सोचले लगावल,फेरू काटल, पर्यावरण के नाम पर आम आदमी के बढ़त परेसानी आ विभागीय लूट खसोट पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करतारन,जे बहुत हद तक सही बा।' लेवा ' में लेवा जे गरीब के घर– बाहर के ओढ़ना,बिछवना दूनो ह आ घर के फाटल पुरान कपड़न से घरहीं बनावल उत्पाद ह , जेकरा से माई ईया के इयाद जुड़ल रहेला, के विशेषता आ वर्णन आत्मिक लगाव के साथे कइल गइल बा।' ढूँढ़न हम आइब ' में लेखक अपना माई के अंतिम साँस लेवे के घरी के मार्मिक ढ़ंग से रखत एगो गीत के माध्यम से सामंती रीति – नीति के मोहक रूप में वर्णन करते ओकरा के बेमतलब आ अमानवीय बतवले बाड़न।

कुल मिलाके ' झनकि बाजे हो ' में संग्रहित रम्य रचनन के पढ़त मन अइसे ओह में रम जाता कि पाठक ओकरा से अपना के अलग क के नइ खे देख पावता आ ओकरा ई आपन गाँव घर के कहानी लागता।' झनकि बाजे हो ' में संग्रहित रचना काल्पनिक सोच से उपजल रचना ना हई सं।ऐहनी में जे चीज हाथ में कँगन जइसन साफ – साफ लउकता,उहे परोसल गइल बा आ उहे साच ह। जनता के चरित मूल रूप से यथास्थितिवादी होला आ एह रचनन में आम जिनिगी के बात कइल गइल बा। एगो बात अउरी साहित्यकार देखावे के कोसिस करेलन कि ऊ विवेक संपन्न बाड़न बाकी सता के रूख देख चाहे ऊ चुप हो जालन,चाहे ज्वलंत प्रश्न के दिसा दूसरा ओरि मोड़ देलन। एगो सच्चा साहित्यकार साच के साच कहेला आ तरफदारी साच के करेला। बलभद्र साच के साच कहे वाला साहित्यकार हवे जेकरा के उनुकर इहो संग्रह प्रमाणित करता। बलभद्र आपन एह संग्रह में सीधा – साधा ठेठ गँवई भोजपुरी शब्दन के प्रयोग कइले बाड़न जे ऐकर सुन्दरता बढ़ा रहल बा। श्री कमलेश राय के शब्द में बलभद्र के लेखनी के बारे में कहे के होई त अतने कहब –

'' देखा है यदि चाँद को कहो उसे तुम चाँद
सच को कहने में कभी करना नहीं प्रमाद।''

अंत में आदरणीय द्वारिका तिवारी जी के शब्द उधार लेके कहल चाहब कि ' आजुवो रचना ठेठ भोजपुरी में गँवई बदलाव, लोग के रहस्यमई चाल –चलन, प्रकृति प आधारित, सामाजिक संद. ेश, चेतावनी,परदा में श्रृंगार, राजनीतिक आडंबर पर होख त खूब पसंद कइल जाई।' आ बलभद्र के ' झनकि बाजे हो ' एह मपनी प पूरा तरे खरा उतर रहल बा।ई संग्रह भोजपुरी साहित्य के समृद्धि के बढ़त एगो बड़हन डेग के नमूना ह।बाकी एह संग्रह के पोरे – पोर में भरल पीर दे खत हम कहब कि ' झनकि बाजे हो मन के भितरी दरदिया '।

झनकि बाजे हो
रचनाकार – बलभद्र
विधा – रम्य रचना संग्रह
प्रकाशक – सर्व भाषा ट्रस्ट नई दिल्ली
मूल्य – 140-00/
कुल पृष्ट – 70

❑❑

❍राँची (झारखंड)

मोथा आ मूंज के जिद आ धार के गजल

बलभद्र

भोजपुरी के कवि शशि प्रेमदेव के दूगो गजल भोजपुरी के पत्रिका 'पाती' के अलग अलग अंक में जब पढ़लीं त ई महसूस भइल कि एह कवि के ठीक से पढ़े के चाहीं। ई कवि आज के समय के कटु सत्य के अपना गीत– गजल के विषय बना रहल बा। ऊ समय के सांच के कहे में नइखे हिचकत। सांच कहल आज कतना कठिन भ गइल बा, ई हमनी के बूझ–समुझ रहल बानी जा। हमनी के जाने के चाहीं कि हर थाना में चकुदार (चौकीदार) होलें। उनकर काम रहत रहे रात–बिरात पहरा देल। पुलिस विभाग के आखिरी कर्मी ऊ होलें। कम तनखाह, कम सुविधा। पता ना अब ई पोस्ट बा कि खतम कर देल गइल। एह बीचे ई शब्द बड़ा जोर शोर से राजनीतिक गलियारा में उछलल। सत्ता के शीर्ष प विराजमान आदमी अपना के चौकीदार घोषित कइलस। पुलिस विभाग के अदना–सा कर्मचारी वाला पद के देश के सत्तापक्षी राजनीतिक गलियारा में बड़ा उछाल मिलल। आ एही बीचे कतने बड़– बड़ पूंजीपति आ कारोबारी ना जाने कतने हजार करोड़ रुपया के घपला क के देश छोड़ देलें। थाना के चकुदार पहरा देत रहल आ चोरी होत रहल। सत्तासीन चौकीदार ताल ठोकत रहल, आ फरार होखे वाला फरार हो गइल। कवनो कवि जब एह बात के विषय बनाई त ओकरा लगे ई सुविधा रही कि ऊ चौकीदार के पहरेदार कहे आ एह सांच के अपना अंदाज में कहे –

" अजबे नूं अबरी के पहरेदार भेंटाइल बा
पहरा देता बाकी दूनो आंखि मुनाइल बा!"

ई लाइन हम 'पाती' (मार्च–जून 2018) से लेले बानी। ई गजल एह तरे शुरू होत बा–

" अंखियन में ना जे कइसन दो चान समाइल बा
पछिले फागुन से नद्दी के नीन हेराइल बा।"

नदी के नीन हेराइल के खास अर्थ बा। नीन पिछिले फागुन से हेराइल बा। फागुन में नदी के नीन हेराना मतलब सुहाना समय में एह बात के चिंता कि आगे के समय सुकून वाला नइखे। ओकर पानी आ रवानी खतरा में पड़े वाला बा। ठीक एही के बाद बा पहरेदार वाली लाइन। 'पहरेदार' एह सबसे वाकिफ बा आ आंख मुनले बा। बलुक ई कि जे एह के लेके चिंतित बा,ओही प ऊ रंज बा।

एगो गजल में शशि प्रेमदेव मोथा के जिकिर करत बाड़न। ऊ गजल 'पाती' सितम्बर 2014 में छपल बा। मोथा के आन्ही से कुछ ना बिगड़ी।

बर – पीपर के जरूर कुछ बिगड़ सकेला। निराला जी के कविता 'बादल राग' इयाद आवत बिया। खूब बूनी परी त घास के का बिगड़ी। महल अटारी प जरूर खतरा रही। जेकरा के कवि नि. राला जी आतंक महल कहत बाड़न। बहुते कवि दूब के जिकिर कइले बाड़न। दूब के जिजीविषा के। कवि केदारनाथ सिंह दूब प खूब बात कइले बाड़न। मोंथा प बहुते कम कवि लिखले बाड़न। मोंथा एगो खास तरह के घास ह, जवन अपना जगह से जाए के नांव ना लेला। जहां होई ऊहां जम के रही। कतनो केहू उखाड़ो। एकर सोर बहुते नीचे गड़ल रहेला। गिरह अस होला। खेत लाख जोत दृ कोड़ के राखे केहू, ई बेजमले ना रही। बहुते जिद्दी होला एकर जर – जरोह। गजल में बा कि आन्ही एकर का बिगाड़ी! ई आन्ही कवन आन्ही ह? का ई प्रतीक बा कुछ के? विचार करे के चाहीं। मोथो के समझे के चाहीं कि ऊ अदम्य जीवनशक्ति वाला आम मेहनतकश के प्रतीक बा। मोथा एगो सांस्कृतिक प्रतीक भी हो सकेला, जवना के बुनियाद अतना गहिर बा कि अपसंस्कृति के आन्ही– तूफान झट डिगा नइखे सकत।

" मोथा के, का खाक बिगारी?
आन्ही पीपर– बेर उखारी!"

पाती, मार्च–जून, 2018 वाला गजल में, जवना के हम शुरू में चर्चा कइले बानी, मूँजि के जिकिर बा। मूंज के सरपत कहल जाला। हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार मार्कण्डेय के कहानी 'गुलरा के बाबा' में सरपत के बारे में खूब बात बा। मूँज बहुत उपयोगी चीज ह। मड़ई छावे में खूब कामे आव. ला। एकरा के लोग पतलो भी कहेला। बेटी के बियाह में माड़ो छवाला। पतलो मूंज के पतई के ही नांव ह। ई बहुते धारदार होला। उघारे निघारे केहू जाए ओकरी राह से, गतरे गतर चिरा जाई। हाथ में चिरा लाग जाई। शशि जी लिखत बाड़न–

" मूँजि कहल जाला केकरा के दृ तूं कइसे जनबे
का कबो पतलो से तहरो देंहि चिराइल बा?"

भोजपुरी गजल में मोथा आ मूंज के अवाई एह बात के सुखद सबूत बा कि भोजपुरी गजल अपना भाषा दृ भूगोल के प्रकृति आ संस्कृति से नया मन–मिजाज के साथे संवाद बना रहल बिया। एही में एगो लाइन बा –

" हाड़ गला के आपन, रसगर ऊखि उगवलीं हम
हमरे बखरा में पंछुच्छुर पुलुई आइल बा।"

ऊख के खेती बहुत कठिन होला। बाकी रस बहुत मीठ। शशि एह बात के बहुत सुंदर तरीका से कहत बाड़न कि बहुत मेहनत से उपजावल ऊख के सबसे मीठ भाग मेहनत करे वाला के भाग्य में नइ खे। ओकरा भाग्य में ऊख के सबसे ऊपर के हिस्सा परेला, गेल्हा के करीब वाला। जहां आवत –आवत रस पंछुच्छुर हो जाला। मेहनतकश के बदहाली के ई अभिव्यक्ति बिलकुल नया बा। बात कहे के अंदाज नया बा।

ई अपना गजल में समाज में लइकी आ मेहरारू के हालतो के वर्णन कइले बाड़न। आज हालत अइसन हो गइल बा कि लइकी आ मेहरारून के जान आ इज्जत खतरा में बा। शशि अपना गजल में 'संत शिरोमणि' लोग के भी जिकिर करत बाड़न। संत आ महंथ लोग के कुकृत्य प गजल लिखल, जरूरी एगो मुद्दा प बात कइल बा।

❑❑

❍ रामगढ़, झारखण्ड

दोहा–देहात

सविता गुप्ता

आइल दिनवा पर्व के,जाइब आपन गाँव।
रहिया जोहत होइहें ,चंदन जइसन पाँव।

माई बाबू साथ में,पके मीठ पकवान।
मुँह में पानी आ गइल ,मालपुआ रसखान।

चूल्हा माटी ना जरी,किनब सिलेंडर एक।
दुखी नहीं अब आँख तब,बरसी खुशी अनेक।

रोटी मकई के पके,अजब सोंन्ह मिठास।
लिपल पोतल दिवाल बा, सुनर लागे निवास।

इनार भी मूँदा गइल,बदल गइल देहात।
भूंजा भांड़ याद में,दलान के सब बात।

बोरा कहाँ बिला गइल,आइल बेंच सकूल।
लइकन सब इस्कूल में,पढ़ाई में मशगूल।

❑❑

❍ राँची झारखंड

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता सहित्यांगन

मलिकार

राजकुमार सिंह

तपी राम आ सुगिया दुनू मरद मेहरारु रहलें. दुनू के बाल बच्चा ना रहे. बाकिर दुनू के दिल में अथाह प्रेम के सागर बहत रहे.जवानी के दिन में पुरनका मलिकार गांव के दखिन में बसे खातिर दस कट्ठा जमीन देहले रहीं. भर जवानी काम धंधा के दुनी परानी अपना जवानी के जोश में रगेदले फिरस.

समय के साथे दुनू परानी के उमिर बुढ़ापा के ढलान पर गिरत गइल. मालिक के देवल जमीन पर माटी के भीत उठा के ओहमें रहे लागल लोग. मालिक के खेत बथार मे देह जांगर ठेठाके काम करे लोग. बाकिर सुगिया के मन रहे कि एगो दुगो बकरी पोस लित त बढ़िया रहीं. ई बात तपी राम के पसंद आइल. उ कहलन कि बिना रुपिया पइसा के कइसे बकरी खरीदाई. सुगिया कहलस कि ओकरा नैहर से माई के दिहल चानी के कंठाहार बाटे, काहे ना ओके बेच के दुगो बकरी के पाठा कीना जाव. ओकनी के पोसला से मनो लागी.

दु दिन के बाद शिवालय पर मेला लागी, सबेरे टोला पर के भगेलुआ आपन टमटम लेके मेला जाई. ओही पर चढ़ के चलल जाई.

दुनू परानी मेला चल गइल लोग. सबसे पहिले सोनार के दोकान पर जाके चानी के कंठाहार देखावल लोग. सुनरा ओह लोग के देखते पहिचान गइल कि ई लोग मुर्गी कीने वाला ना बेचे वाला बा. कंठाहार हाथ में लेके सुनरा ओह लोग से बोलल कि माल सही नइखे, ओकरा बादो दस हजार तकले दे सकत बानी. पुरना जमाना के कंठाहार बीस हजार से कम के ना रहे, बाकिर सुनरा ठग लिहलस.

मेला में घूम घूम के सुगिया अपना खातिर साया, साड़ी आ बेलाउज कीनलस आ तपी राम खातिर धोती, कुरता, गमछा आ चप्पल ।

बकरी हाट में दुगो पाठा बड़ा सुघर रहलें सं, जेकरा के आठ हजार में कीन लेलख लोग. एही बीच तपी राम एगो पीतल के घंटी आ गरदन में पगहा टीन के डाल दिहलें. पाठा लेके दुनू परानी चउराहा पर चहुंपल लोग. बाकिर भगेलुआ टमटम लेके ना आइल. ओकरा बाद तपी राम अपना मेहरारू से बोललें कि जमाना खराब बा, पैदलही चलेके ना त सांझ हो जाई। ठीक समय से सुगिया आ तपी राम पठरू लेके घरे पहुंच गइल लोग.

जाड़ा के दिन रहे। एहसे घर के सहन में घुर जरा के बइठ गइल लोग. ओही समय मालिकार रामअयोध्या सिंह के आवाज दिहलें। कहलें कि आज "बेटा के तिलक बाटे. सांझ के भोज बाटे। ओह में शामिल होखे खातिर दुनू परानी आ जइह लोगिन.

तिलक के दिने दुनू परानी सुबहे मलिकार के घरे चहुप गइल लोग. साथ ही झारू लेके तिलक में साफ सफाई करे लागल लोग. तिलक में मांसो भात चलत रहे. लोगन के खिलावे में रात के तीन बज गइल. एका एक रामअयोध्या सिंह कवनों काम से बाहर अइलें त, तपी राम सुगिया के देखते झुझुआ के कहलें कि हाता में बइठ के दुनू जाना खा ल लोग। ओकरा बादे समुचे दुआर के बुहार सुहार के घरे चल जइह लोग.

दुनू परानी हाता में खाये बइठल लोग. पतल में भात आ मांसो के जगे सिरूआ आ कुछ हड्डी उझिल देलख लोग. तपी राम जब खाना में हाथ फेरलेन त उनुकरा कौर में उनुकरा खस्सी के घंटी आ गइल. उ चिहा के घंटी देखे लगलें. ना समझ में आइल त आपना चश्मा नाक से उतार के साफ कइलें आ फेरू पहिरले. घंटी देखते उनकर मन रोवे लागल. एकरा बाद घंटी के उ सुगिया के तरफ बढ़ा दिहलें. सुगिया घंटी देखते चिहा गईल। उ समझ गइल कि मलिकार के सब करतुत घंटे। समझ ग

ओकरा बाद गमगीन सुगिया दुनू हाथ ऊपर उठा के करेजा पर मरलस आ ओकर देह पाछा के भरे जमीन पर उलट गइल. ई देखते तपी राम कंपकंपाये लागलें आ रोने लगलें. शोर शराबा सुनके मलिकार ओकनी के पास अइलें। तपी राम के छाती पर हाथ रखके मालिस करे लगलें. एह पर तपी राम हाथ के घंटिया मलिकार के धरा दिहलें. रामअयोध्या सिंह घंटी देखते मामला समझ गइलें. उनुकर शैतान मन छाती मलते मलते गरदन के ओर बढे लागल. गरदन पर हाथ पहुंचते मलिकार ओकर गरदन जोर से दबा दिहलें.

ओकरा बाद उ ऐने ओने तकले त, सब उनुकरे भाई भतीजा ठार रहस. ई घटना देखके सभे मुसकात रहे.

आखिर में राम अयोध्या सिंह गरजत कहलें, ई तपिआ दुनू परानी के हमरे दुअरा मरे के रहे. एकनी के टोला में जाके खबर कर द लोग कि दुनू के लाश हटावे के परबंध करें लोग.

❑❑

❍ राजबाड़ी रोड, झरिया थाना के पास धनबाद झारखंड.

मीठवा

डॉ सुशीला ओझा

सबेरे कुहासा से कुछ लउकते नइ खे।सगरो धुआँ–धुआँ भइल बा।ठहरे के चीज नइखे लउकत।हाड़ कँपावे वाला जाड़ बा।ओपर से पछुवा हवा ललकारत बा।इ जाड़ हड्डी में भाला खनिया छेद के ए पार से ओपार होता।हाथ–गोड़ में बिच्छी मारतीया।ऐहिमें चोट लागला पर मन तिरमिरा जाता।कही शरण नइखे। गाँछ बिरिछ सब रोअता।आ ओकरा लोर से धरती के आँचर भींग जाता।ओही सबेरे गाय–गोरु के नांदा पर बान्हे के बा।घूर फूंके के बा।. तनी मोसवा से ऊबार होई।अपनो देहिया गरमा जाई।गेड़ छिलाता बड़की फूलवारी में।

जाड़ होइहे चाहे जाड़ के बाप गेड़वा छीले त जाए के बा।घास नईखे मिलत गेड़वा के मिठास से दुचलावन ढेर खईहन स।खईहन स तबे नु दूध होइ।

रे.....हे...मी...ठ...वा उठ ना गेड़ के ना जइबे तोरा निसा लागल बा।उठ ना त मुँह में से ललका पानी गिरावे लागब।गड़ासी निकाल बहर जल्दी।खाए के भर छिपा खइब स आ गेड़ ना ले अइब स।

''रे..हे...मा...ई...लेधड़ी के पेठा दिहे''।गेड़ के भारी बोझा अकेले ना उठी।पतलो ले आवे के बा साइकिल पेठा दिहे।ओहि भोर में बिगना उठ जाता ।हमहुँ चलब..रे ते कहाँ जइबे हम ऊँख ले आइब.. जो पुअरा में लुका जो।

बिगना के माई रमरतिया के लइका ना होत रहे।त ओ टोला के एगो बाभनिन बतउली कि लइका होइ त बहारन पर बिग दिह स ।उ लइका अखे –अमर हो जाला।फेकुआ के नाती बिगना ह।फेकुआ बहु सब दिना से एगो लइका अपना लगे राखेले।नाती के नाम परलोग समान देइवो देला।आ चोरावे के, गरिआवे के त घुटीए में पिआवल जाला।रे भर छिपा खातारु सन..धउर सन..गेड़ ले आवे .. बड़की फुलवारी में छिलाता।अगल–बगल के गाँव के लोग के दीठ एही गेड़ पर बा। आँख मिसत जाड़ के कंपकपी त गेड़ छिलते में भाग जाला ।झुंड में गडासी पीटत डगरी में के गाछ बिरिछ पर गड़ासी चलावत अपना नउवा के रंग लगावत खेत में जातारे सन ।हंसी ठिठोली ,दउरा दउरी ,बजना–बजनी में जड़वा डेरा जाला।

गेड़ छिलाता ओहिमें आँखिया से सान मटकी चलता ।सुकटा जोन्हिया से सट के गेड़ छिलता।ओहिमें बजना बजनी एगो दोसरे लीला होता । गेड़ छिलत में ऊँख चोरावे के अलगे इलिम बा।जेमें ''सांपो मरा जाय आ लउरो ना टूटे''।एतना बड़का पलिवार के परवसती खाली कमइले से ना नू होला''जे मुँह चीरले बा उहे नू पेटो भरेला'' एकरा के चोरी ना कहल जाला इत जलम के अधार बा।

ऊँख छिलत बजना–बजनी करत काली माई आवता लोग।ओकनी से केहु जीती– गारी देबे में , चोरावे में,लबरियावे में सरब गुन में माहिर बाड़े सन।फेकुआ बहु किरिन निहारतिया अभी ले गेड़ ना आइल।इकहवाँ रह गइली सन..''महतरिया'' ''हमरा बापवा के मउगी''भउजी लोगिन ''हमरा भइयवा के मेहरारू..''कहंवा रह गइलु स रे आव सन तोनी के मुँहवा से ललका पानी गिरावतान. ी।लेधड़ी के गेड़ अभी मथवे पर बा। फेकुआ बहु उनकर झोंटा बान्हि के लटका के गेड़ में के चोरावल ऊँखी से मरम्मत करे लागल ''वेसवा स तोनी के जवानी के हवा लागल बा।आव सन धि ाकले–धिकले खियावत बानी।ए बेटी सन के मारे हम भीखइन हो गइल बानी''

फेकुआ बहु के आठ गो बेटी बाड़ी सन।दुगो बेटी पर से बेटा भइल त लोग कहल कोठी उलटवा ले ।बड़ा निमन बेटा–बेटी के सारधा पुर गइल बा।फेकुआ ब लागल गरियावे''रे कवनो हमार खरची चलावता..पलिवार देख के सिहाता..तेतना बनिहारी भगवान के देले होखब तेतना मिलबे करी।आठ गो बेटी बा त नगर के आठ गो बेटा जलमा के देखा देब ।रे कहाँ बाडु स रे भर छिपा खालु सन आ हइ फुलेनवा बो के गरियावे में तहनी के जीभिया में कसर हो गइल बा।गरियाव स ना रे सौतिनिया''।सब मिलके फुल. ना काकी के गारी से तोपे तोप क देली सन।

घास गढ़त में, लकड़ी काटत में,भइस चरावत में, बिपती के बड़ा मजा आवेला। सब छवारिक सब से आँखे से मटका मटकी होता।ओहिमें आजुकाल के मोभाइल त अउरी नया –नया राह देखावता।भइस खोल के,बकरी खोल के,दोसरा के खेत में छोड़ के अपने मोभाइलवासल बाड़े सन।चोकटा के सारी गहुँ भइस आ बकरी मिलके चर गइले सन।चोकटा बो रोवत कलपत फेकुआ बहु के ओरहन देबे आइल ।

सब एकवट गइले..सन हम किरिया खातानी हमार माल सरेह में ना गइल हा।हमरा पर हम दुबर बानी ओहिसे झुठ ओरहन दे तारे सन। अचरा उठाके सुरुज के गोहरावतानी सन..हे सुरुज भगवान ऊपर तु बाड़ आ नीचे धरती मइया बाड़ी एकर निसाफ तुहीं करिह''।चोकटा बो के

सब एक जुट हो के मारे लगलन स।अकेले चोकटा ब आ एकनी के महतारी बेटी मिलके नवगरह ओकर हड्डी –पसली तूर देली सन ।

बेचारी चोकटा ब रोवतो रहे अवरी कथो कहत रहे ।कथवा के कहला में लोरवा कमजोर हो गइल रहे।

फेकुआ के बेटी चोरी –सीनाजोरी में निमन जानकार बाडीसन।कहीं से केरा के घवद काट के एकछन में अलोपित क दिहन सन।आम –लीची के दिन में जेतना बगइचा वाला के घर में आम ना होइ ओतना एकनी के घरे में जमकल रहेला।सब अहुनाइ पहुनाइ पेठावल जाला।

फेकुआ ब किंहा बेटियन के लइकवा पोसाला चोरावे खतिरा।नाती के फायदा अलग उठावेले स आ चोरी के माल से घर अलगे भर जाला।
केहु ओरहन दी त कहिहन स..'' हे बउधी भगवती ! हमरा के झुठे कलंक लगावतारे स।एकरा घर में भु खइले अइह आ अघइले जईह''

सरकार एतना मदद करतिया लेकिन पढे–लि खे से दूर –दूर के नाता नइखे। पढ़े में पइसो लागता आ इ रोजगार त रोज के बा ।पढ़ के भमिरा होके का होई।बाभन लोग कींहा कोक शास्तर पढ़ि के उपास पड़ता लोग ।हमनी के निपट गँवार होके घर में सारी चीज भरल बा।

सुबह अँधियारे में फेकुआ बो भइस नादा पर बान्हेले।आ भइसिया ,गइया से कहेले..ऐ धीरा....धीरा... पहिले त इ बात हमरा समझ में ना आवत रहे बाकिर अब बुझाता धी...रा..माने धीरे।मालवा के धीरे अथिर रहे के इशारा बा। शायद भइसिया फेकुआ ब के बात सुनके अथिर हो जाले।अपने घुरा तर बइठल रहेले रे.. ..ले...ध...ड़ी छांटी डाल ।गरजत रहेले फेकुआ ब।क. ाली के रुप में धरती पर जलम लेले बिया।गरजत रही आ ओकरा से केहु पूछ दी कि'' ए मीठवा के मतारी का हाल चाल बा?''ओकर कंठ निमुल हो जाइ।कंहर के ,दीन–हीन आवाज में कही.. ''ए मी...ठ.. .वा एक लोटा पानी दे''।तब ओकरा कंठ में परान आइ ।''का कहीं ए काकी ओ टोला के बाभनीन हमरा के डाइन क देले बाड़ी।अन्न पर ताकले नइखे जात''..आहि...आहि ।जइसे काकी विदा लिहन लोटा गिलास में चाह उझिलाए लागी।''रे मी...ठ...वा..हमरा के खालिस दूध में चाह बनइहे।त. हनी के सुअर के खोभार बाड़ सन आपन अलगे बनइहसन''।

मीठवा करिया बिया ओहि से ओकर नाम करिया मीठा धराइल..''करिया मीठा तेरे पाई ना बिकायी घरे जाई''।करिया मीठा कहते कहते ओकर छोटहीं से दुलार के नाम मीठवा हो गइल।लेधड़ी चलते ना रहे पाँच बरिस तक, बइठले रह गइल।ओकरा बाद चले लागल।''बिपतिया'' बड़ा बिपत में भइल रहे.. फेकुआ बो के टी.बी हो गइल रहे ।ऐहि से ओकर नाम बिपतिया रखाइल।

ओहि तरे अन्हिया,तुफनिया,बिगनी,फेंकनी , ढेलवा..जस नाम तस गुन।ढेलवा बउनी रहे,अन्हिया आन्ही में,आतुफनिया जेठ के भारी तुफान आइल रहे। अस्पताल जात बेरा पेड़े में रेस्का पर तुफनिया के जलम भइल।

''चमइनियां के भगउती''के लगे केतना नचले बिया फेकुआ बो ,केतना बकले बिया आठ गो बेटा गांव नगर के देखावे खातिर।माने नगर के आठ गो बेटा जलमा के ना देखवलस।भगवान ओकर मिनती ना सुनलन। गांव नगर के लोग ओकर आठ गो बेटा देखे खतिरा अजुवो ओतने जोहत बा।भगवान के लगे केकर चलेला ।

❑❑

❍ बेतिया, चंपारण, बिहार

यम द्वितीया

सन्नी भारद्वाज

हिन्दी महिना के कार्तिक माह में शुक्लपक्ष द्वितीया तिथि के भाई दूज चाहे भईया दूज मनावल जाला । एह भईया दूज के ही यम द्वितीया भी कहल जाला । मान्यता इ बा कि बहिन लोग अपना भाई के यश–कृति , खुशहाली ,आ संगे संगे अपना नाता के जन्म जन्मांतर तक बरिआर रखे खातिर एह त्योहार के मनावेला। कही कही एकर महत्व एतना बा कि बहिन लोग पुरा दिन उपवास भी राखेला ।

पौराणिक संदर्भ में भी भइया दूज के प्रमाण दिहल गइल बा । बतावल गइल बा कि यम(जमराज) अऊर यमुना दुनो लोग भाई–बहिन रहे । एह दिन यमुना अपना भाई यम के अपना घरे बोलवली, अउर उनकर विधि विधान से पूजा कर के बिजय करवली ।

अपना बहिन के इ सोवागत देख यम बड़ खुश भइले आ कहले कि बहिन जवन चाही आजु मांग ले । एह बात के सुन यमुना अपना भाई से नरक में रहे वाला सब लोग के उहा से निकाले के कह देहली । ओह दिन यम सभ नरक भोगे वाला लोग के आजाद कर दिहले आ खुशी मन से अपना बहिन यमुना के विदा कइले । नरक में रहे वाला लोग अपना आजादी से खुश भइले , अउर ओह दिन यमलोक में एगो उत्सव मनावल गइल । जेकरा के आज यम द्वितीया चाहे भईया दूज कहल जाता ।

लोक प्रचलन में एह पर्व के दिना बहिन लोग पीढ़ा पर चाउर के घोर से पांच गो आकृति बनावेली, आ ओकरा बिच में सेनुर लगा के, साफ पानी से पवितर कर के , कुम्हर के फुल से ओह पीढ़ा के पूजा करेली ।ओकरा बाद बहिन लोग अपना भाई के गोड़ धो के ओही पीढ़ा पर बइठा देवेली। फेरू भाई के अंजुरी में चाउर के घोर पोत के ,सेनुर के टीका लगा के , पान के पत्ता, सोपारी, कुम्हर के फुल से भाई के अंजुरी भर देवेली । ओह भरल अंजुरी के देख बहिन लोग कहेली " जइसे यमुना के बोलवले पर यम अइले ओइसे हमहू आज अपना भाई के बोलवले बानी ।
हे यमुना जेतना बड़ तोहार धार बा ,हमरो भाई के यश –कृति , उमर ओतने बड़ होखे " । एतना बात कह के बहिन लोग भाई के हाथ में पानी छिरीक देवेली। ओकरा बाद भाई के खुब सुघर खाना खिया के कपड़ा दे के , मारे परेम स्नेह से गदगद होखेली आ भाई के भी गदगद कर देवेली।

मथेला में यम द्वितिया के संगे जनम द्वितीया के बात कहल गइल बा । अब ओहपर लौटल जाव ।

हिन्दु मान्यता में दु परिवार के मिलन अउर ओहमन दुल्हा दुल्हिन के नाता, बिआह कहल जाला । जवना के बाद कनिया दुल्हा के घरे चल जाली , आपन नइहर दूसर घर हो जाला ,ससुरा आपन घर हो जाला । बिआह के बादो एगो रसुम होला जेकरा के गवना (द्विरागमन) कहल जाला ।
इतिहास के पलट के देखल जाव त हमनी का देश में बाल बिआह एतना होत रहे कि आज सुनला पर भी पीड़ा होला । ओह समय लइकी आठ बरिस ,नौ बरिस ,दस बरिस ,कही कही त सातो बरिस में बिआहल जात रही । खैर ! ओह करिखा में कुछ सफेदी एह गवना के माध्यम से दिखल । काहे से कि बिआह भले दस बरिस पर हो गइल बाकि गवना(ससुरा जाए के रसुम) पांच ,सात ,नौ बरिस बाद होखे लागल। माने कि अब लइकी लोग पनरह, सतरह भा ओनइस बरिस पर ससुरा जाए लगली।

गवना में लइकी का संगे समान साज देवे के चलन ओह समय भी रहे , कहल जाला कि एह यम द्वितीया के समय किसान के हाथ में कुछ रकम के जोगाड़ हो जात रहे ।काहे से कि धान सभका दुवारे खरिहाने लऊके लगे। दोसर बात कि हिन्दु मत वाला लोग एह यम द्वितीया के बाद से आपन शुभ काज कइल ठीक मानत रहे । माने कि धन भी रहत रहे आ धरम भी कहत रहे । त गवना के चलन एह महिना बाद जादा बढ़ गइल।

त जवना लइकी के बिआह हो गइल बा आ ओकर पाच ,सात ,नौ पुरत बा ,ओह लइकी खातिर इ त्योहार बदलाव के संकेत देवे लगत रहे कि अब तोहर जनम के एक पक्ष खतम होता , अब जनम दुसरा पक्ष का ओरी बढ़ी। एह बात के सोच के हर बहिन लोग अपना भितरी उदासी समेटे लागत रही ।

पहाड़ी मत के देखी त इ त्योहार बहिन लोग एही खातिर मनावेली कि " हे भाई आजु जइसे हम तोहार अंजुरी भरत बानी , ओसही सारा उमर तुहू हमरे अंजुरी के अपना परेम से खाली मत होखे दिह । इहा से हम भले दोसरा घरे चल जाइब बाकि तु हमके दोसर मत बुझीह "

लोक पर्व आ त्योहार समाज के सबसे बड़ तागत होला, जेकरा चलते पुरा समाज अउर ओहमन रहे वाला लोग ,माला के जइसन नथाइल रहेला।

हर बहिन लोग के भाई दूज ध यम द्वितीया के बधाई, हर भाई अपना बहिन के अंजुरी नेह से भरत रहो।

जय यमुना जी ।

❑❑

❍भभुआ , बिहार

दू गो लघुकथा

अशोक मिश्र

ई कइसन बधाई

लोक सेवा आयोग के परिणाम घोषित होते, राहुल के ईंहा बधाई देबे वाला लोग के तांता लाग गईल। राहुल के एहि परीक्षा में सातवां स्थान मिलल रहे। घर में पूरा चहल–पहल रहे,फोन हर घड़ी घनघनात रहे। केहु के फुरसत ना रहे फोन उठवे के।
बाकिर तनिक फुरसत पा के राहुल के माई मीना देवी फोन उठा लिहली।
फोन उठावते दोसरा ओरि से आवाज आइल–अनघा बधाई भौजी। का हो,तू तऽ हमार फोनवो नइखू उठावत। लइका के सरकारी नोकरी पावते तू त धरती छोड़ देले बाडू।
अब अइसन अंदाज देखि के मीना देवी के दिमाग चकरा गइल ऊ सोचे लगली कि लड़ाई से शुरू ई कईसन बधाई ह।

❑❑

स्कूल खूलला के खुशी

मुन्नी खूब खुश रहे । भाई के काम से लौटते चहक के कहलस –
भैया ! काल्हु से स्कूल खुल रहल बा।
ओकर भाई कहलस– त अइसे हमनी का? हमनी के कवन स्कूल जाए के बा।
मुन्नी पलटते कहलस – आरे उहां से रद्दी बिने के मिली, जवन बेच के पइसा कमाईल जाई आ भर पेट खाईल जाई।
बेटा –बेटी के बातचीत सुनि के माई के आंख से लोर बहि चलल आ ऊ आपना आंचरा से मूंह तोप लिहली।

❑❑

❍ कटनी, म प्र

अशोक कुमार तिवारी

मानवता के राह

अशोक आ मनोज दूनो मित्र फल दुकान से फल खरीदत रहे लोग कि मइल – कुचइल कपड़न में सोरह–सतरह साल के एगो लइका ओह लोग के पास पहुंच के चिरउरी करे लागल–
''हमार बाबूजी बेमार बाड़े.... दवाई खरीदेके बा.... कुछ पइसा के मदत करीं सभे।'' लइका के आवाज में बेबसी भरल रहे।
''केतना रुपया चाहीं.. दवाई खातिर?'' अशोक पुछले ।
''रोज साठ रुपया के दवाई लागेला।'' लइकवा कहलस।
''ठीक बा... हई सइ गो रुपया लऽ.... कुछ उनुका खाहूं खातिर लेले जइहऽ ।''अशोक सइ रुपया के एगो नोट ओह लइका के देत कहले।
'' भगवान जी रउवा के एकरा सइगुना देसु।'' ऊ लइका आगे बढ़ गइल। अब आज शायद ओकरा दोसरा केहू के मदत के दरकार ना रहे।
'' जानतानी भाईजी, ऊ लइका रउवा के ठगि ले गइल। ओकर रोज के ईहे काम बा.... रउवा त सइगो नू दे देनीहा.. .. लोग दस–पाँच देला आ दस–बीस लोगन के दवाई के नांव पर चूना लगाके आपन स्वार्थ साधेला। जानऽतानी ई बगले के गाँव के हऽ आ जवना बाप के दवाई खातिर पइसा मांगता ओकरा मुअला तीन साल हो गइल.... माई त पहिलहीं से नइखे.... एकर एगो बड़ बहीन आ दूगो छोट भाई बाड़ेसन... ई अइसहीं लोगन के बोका बना के आपन परिवार पोसेला। हम ओहघरी एहसे ना बोलनीहा कि का जाने रउवा बाउर लागी। ''मनोज एकसुरुकिए कहत चलि गइले ।
'' मनोज भाई.... रउवा ना बोल के अच्छा कइनीहा.. आ ई सब बात हमरा पहिलहीं से पता बा जवन रउवा बतइनी.... ईहे ना हमरा ईहो पता बा कि ओह लइकवा के डांड़ में एगो झोरा खोंसल होई जवना में ऊ रोज खरची–बरची कीन–बेसहि के ले जाला.... कइ बेर ओकरा के हम अइसन करत देखले बानी ।'' अशोक हलुके–हलुक मुसकात कहले ।
'' तबो रउवा पइसा दे देनीहा? ''मनोज के चेहरा प अचरज रहे।
'' हंऽ तबो दे देनींहा। ''अशोक अभियो मुसकात रहले।
'' कांहे? ''मनोज कारन जानल चहले।
'' एह से कि ओह लइका खातिर जहिये ई रास्ता बन्द हो जाई ओही दिने ऊ दोसर राह पकड़ लिही, जवन हमरा खातिर, रउवा खातिर, एह समाज खातिर भा केहू खातिर नीक ना होई। बुझाइल?'' जबाब देत अशोक अब गम्भीर रहले।
'' हँ अशोक भाई.... रउवा ठीक कहत बानी। '' मरम बूझ के मनोजो अब गम्भीर हो गइल रहले। ❑❑

❍ बलिया,30प्र0

निर्जीव के गुलाम हो गईल बा

अभियंता सौरभ भोजपुरीया

हमरा बिछवाना से उठते छाती में बड़ी जोर के दर्द शुरूरू हो गईल ....कही ई हार्ट अटैक के दर्द त ना ह ? इहे सोच के हम बईठाका में गईनी जहवाँ हमार कुल परीवार मोबाईल में अझुराईल रहे.....

दर्द बेशी बढ़ल जात रहे ! हम आवाज देहनी अपना बेटा के .....
बेटा डॉ के लगे फोन लगावा हमार तकलीफ बढ़ल जात बा..बाबू जी हम ई खेल खेलत बानी बड़ी मुश्किल से त आज ई लेवल पार भइल बानी रउवा केहु अउर के कही !
पत्नी के देख के कहनी हमरा छाती से आज तनी जादा दर्द बा हम डॉ के लगे से आवत बानी .....

उहो मोबाईल में देखते कहली सम्हार के जाएम बाकीर मोबाईल ना छोड़ली ..।

स्कुटर के चाभी लेके चालु करे लगनी ...दर्द अब बर्दाश्त से बाहर होत रहे उपर से पसीना से पूरा देह भीज गईल रहे । स्कूटर चालू ना होत रहे....

तबले हमरा घरे काम करे वाला मुरारी आ गईल....
का भईल साहेब स्कूटर चालु नईखे होत का ! आ अतना पसीना काहे होत बा रउवा ? लागत बा राउर तबीयत ठीक नईखे ?
दी हम चालु कर देत बानी ।आ अकेले जात बानी ?
ह हो हम कहनी ....
ई हालत में अकेले ठीक नइखे बईठी हम छोड़ देत बानी ।
नजदीक के अस्पताल में हम पहुँच गईनी । मुरारी भाग के भीतर से विलकुर्सी लेके आ गईल .. ..
साहेब अब ई कुर्सी पर बईठ जाइ चलल ठीक नई खे ...

मुरारी के फोन पर फोन बाजत रहे ...हम समझ गईनी की देर भईल बा मुरारी के घरे आवे में त सभे बेचौन होइ ....
थक हार के केहु से कही देहलस की हम ना आएम .....
मुरारी हमरा के जल्दी से आई सी उ में लेके गइले ।उहवाँ डॉ के टीम रहे । जल्दी हमार ईलाज शुरू हो गईल ..फटा फट सब टेस्ट हो गईल । रिपोर्ट में मालुम चलल की हमार हार्ट के आपरेसन करे के पड़ी ।
डॉ साहेब अच्छा भईल की रउवा सही टाईम से पहुँच गईल बानी अगर देर होइत त कवनो अनहोनी हो जाइत ।
अब देर जनी करी आ ई फारर्म पर परिवार के साइन करवाई आपरेसन कइल बहुँत जरूरी बा ।

हम मुरारी के निहारे लगनी ...आँख से आँसू बहावत हम कहनी बेटा बिना कहले तु अतना बड़ जिमेवारी निभा देहल त एगो अउर करी द । असल मे ई सब हमरा परिवार में जिमा ह बाकीर तहार ई उपकार जीवन भर हम ना भुलाएम
आँख में आँशु भरले उ साइन करी देहलस ।

अभी हम आपरेसन खातीर जात रहनी की एक बेर फेर फोन के घण्टी बाजल मुरारी के मुरारी बड़ी आराम से ओने के बात सुनत रहे ...
थोड़ देर बाद मलकिन हमरा के निकाले के बा त निकाल दी ? हमार पगार काट दी ? अभी हम ना आएम काहे की साहेब के लेके हम अस्पताल आईल बानी आ आपरेसन शुरू होखे वाला बा ।
मुरारी मलकिन के फोन रहल ह ? ....
ह साहेब .....
हम मन मे सोचे लगनी ...की उ केकरा के निकाले के कहत बाड़ी ? केकर पगार काटी दिहे ! ओकर जेकरा चलते आज हमार दूसर जन्म मिले वाला बा ...जकरा चलते आ उनकर माथ के शृंगार चमकत बा ....।
आँख में लोर भरले हम मुरारी के कान्हा पर हाथी रखी के कहनी तु घबरा जनी सब ठीक हो जाई ।आ आज के बाद तु हमरा घरे काम परी मत जईह ? उ पढ़ल लिखल इंसान के रूप में भेड़िया बाड़े भेड़िया ।
हमरा पॉकिट में एगो पर्ची बा तु निकाल के ई उहवाँ के साहेब के देखा दिह । तहार जन्म दाल रोटी पकवल बर्तन मजाल आ कपड़ा धोवे खतीर ना सेवा खतीर भईल बा । तहार जरूरत हमरा घरे ना ई लिखल पता के बा जा बेटा जा .....

ऑपरेशन भइला क बाद हम होश में आईनी .... हमार सब परिवार सामने खड़ा रहे ... गोपाल कहाँ बाडन ..... ? आ तु लोग इहवाँ का करत बडा लोग !

हम ठीक बानी आ तहरा लोगन के जरूरत नईखे । जा लोग आपन गेम मोबाईल आ सखी सहेली से बात कर ।

एगो मोबाईल के लत परिवार से कतना दुर करी देता ....रिस्ता बनावटी हो गईल ...लोग जिंदा इंसान के छोड़ी के ई निरंजीव से प्रेम करत बा ...ई हर घर के कलह के कारण भी बा ....बेटी बहु हर छोट छोट बात ससुराल के आपन माई से बतावत बाड़ी .. आ उनकर बतावल बात अमल करत बाड़ी जवना के नतीजा बा की बीस – बीस बारिस ससुराल में रहला के बादो उ परिवार में घुल मिल नईखी पावत । ईगो पाहिले के माई रहली बेटी के समझावत रहली की देख ससुराल चाहे जइसन भी बा ऊहे तोर घर ह .... नईहर से बेटी के डोली जाला आ अर्थी ससुराल से । बाकीर अब ना । हर छोट बात बड़ बन जाता तुरन्त बैग लेके नईहर ।

डॉ साहेब आइले ... चेक करी के कहले ..... रउवा चिंता जनी करी एकदम ठीक बानी । भगवान के शुक्र बा की राउर ईलाज सही समय पर हो गईल । .....

बाकीर ईगो बा पूछी ..... ई गोपाल राउर के ह ! का रिश्ता बा राउर ?

हम कहनी ...डॉ साहेब कुछ रिस्ता के नाम आ गहराई में ना गईला से ओ रिस्ता के गरीमा बनल रहेला । हम त अतने कहब की हमरा ला उ देव दुत बाड़न । भगवान आ भक्त के रिस्ता बा ....

हमरा के माफ करी दी बाबूजी जी हमरा जवन करे के चाही उ गोपाल कइले ।अब से ई गलती कबो ना होई । अब हम मोबाईल कबो ना छुवेम .....

बेटा ....जिम्मेदारी आ सलाह दोसरा के देबे खातीर होला ....जब अपने बारी आवे त लोग अने ओने मुँह फेरी के चल देला । आ रहल बात मोबाईल के त .. ई निर्जीव खेलवना ईगो जीवित खेलवना के गुलाम बना देले बिया .... अगर समाज देश एकर उपयोग कइल कम ना करी त समाज देश के बहुँत बढ़ खामियाजा भुगते के पड़ी ..... ।

हम ठीक हो के गोपाल के लगे आ गईनी । जे हमार देहल पता पर ईगो बिरधा आश्रम में लोग के सेवा करत रहले ।।

❑❑

❍ सिवान (बिहार)

दिलीप पैनाली

रोपनी गीत

खेतवन में लाग गइल पनिया
ए धनिया कर रोपनिया,
किन देब पाँव पैजनिया
ए धनिया कर रोपनिया ।

लहँगा ले आई दिहब जयपुर से,
सिलिक के सड़िया मँगाइब मैसूर से।

सजनि बुझ परेशनिया,
ए धनिया कर रोपनिया,
किन देब पाँव पैजनिया
ए धनिया कर रोपनिया ।

सुख जाई लेउआ त बढ़ी हलकानी,
पइसा के बाटे बहुते टनाटानी।

एकबेर मान ल बचनिया
ए धनिया कर रोपनिया,
किन देब पाँव पैजनिया
ए धनिया कर रोपनिया हो।

जवन जवन मँगबू से सब कुछ किनाई,
अबले टराइल बा अब ना टराई।

पैनाली जी के हउ तूँ सुगनिया
ए धनिया कर रोपनिया हो,
किन देब पाँव पैजनिया
ए धनिया कर रोपनिया ।

❑❑

❍ सैखोवाघाट असम

बिम्मी कुंवर

उत्पाती मन

बीतल बरिस के बात ह गुइया,
कई दो बरिस के साथ ह गुइया।

मन के कोना में इयाद के एगो बसेला
सुनसान कोठरी,
जहवां गहिर अन्हेरिया अउर
छूतिहर तन्हाई के पसरल डेरा बा,
पुरूआ–पछुआ, परब–तीज के
हकासल लमहर फेरा बा।

मन के दिअरखा प टिमटिम जोन्ही
झंकला प मटमइला सउसे।
मधुर इयाद भी ओतने बेसी
बइर–टिकोरा–लकठो जइसे।।

सावन के जब चलेला आन्ही
त अखिया भादों लेखा बरसे,
उ का जाने उनके खातिर बेकल
मनवा हरदम तरसे,

भांय भांय करे फगुआ के दिनवा,
बूझे ना! कहवा अझुराइल मोरा मनवा,

कवन अधूरा गाथा मन के
करेला उत्पात सखी,
कवन अधूरा बात करेजा
सिहकेला दिन–रात सखी,

❑❑

❍ चेन्नई

सन्नी भारद्वाज

आखिरी अटल

मुख वेद उचारत जन्म लिये
एक विर महा बलधीर कहाई ,
बोअत ज्ञान फिरे सगरी
डगरी मंहकी पगरी बतलाई।
मारी सफेदी के कालिख में
हिरवा के नियन चमकल सुघराई,
राजा भए त भए अइसन
जनता भी कहल देखा राजा जी आई।

एक्के गो देश के पुत उहे
पहिला भी उहे उहे आखिरी भाई ,
एक्के सहारा मां भारती के
ओकरा बिना माता कहां फिरू जाई।
लोग बतावे कि सुरज ह
न रही त कहा से फिर आई ललाई,
जाई त जाई संघे पुतरी
दिनहू मे न लऊकिहे लोग लुगाई।

नाद संगे इहा वेद रहे
जहां वेद रहे उहां नाद ए भाई,
जाती आ पाती के छोडी चलो
दुनिया के इहे इतिहास बताई।
देले कलाम के देश तबे
मनलस दुनिया उनकर समताई,
आ हार के भी हस के कहले
देहलस जनता हमके ठुकराई।

पाप के नाम न बा उंहवा
पपिया भी रहे त रहे सकुताई,
तारन मारन काटन घाटन
साथ रहे त रहे दुबकाई।
मित के मित ह पुछी जनी
हियरा गुदरी तक देई चढाई,
दुश्मनी के भी महारथी ह
सोचला करगिल क्लियर हो जाई।

❑❑

❍ भभुआ (बिहार)

गीत

सुरेश कांटक

खोजि खोजि गोर वन के
लिहलें खबरिया
महान भोजपुरिया
देखवलें फुलझरिया, महान भोजपुरिया !

फतहे बहादुर, वीर कुँवर मरदानावा
मंगल पाँड़े फाँसी चढ़ि दिहलें परानवा
कबहूँ ना जुलुमिन के
कइलें जी हजूरिया, महान भोजपुरिया !

बासुदेव,महादेव,सभापती,गिरिवर
जगरनाथ, अकली,रामानुज जइसन शेर नर
देश खातिर दिहलें
लसाढ़ी में उमिरिया, महान भोजपुरिया !

बाइस करोड़ जन दुनिया के जानी
गाँव गाँव कहे भोजपुरिया कहानी
चललें मिटावे जे
गुलामी के अन्हरिया, महान भोजपुरिया !

बागी बलिया के चीतू पाँड़े मस्तानावा
लोहा अंग्रेजवन से लिहलें जवानवा
बोवलें सुराज के
अमर चिनगरिया, महान भोजपुरिया !

कांटक लिखाई अब नया इतिहासवा
गाँवे गाँवे लड़ल जे गवाई ओकर जसवा
झूठा इतिहास के
उड़ासी ई बजरिया, महान भोजपुरिया !

❑❑

❍बक्सर,बिहार

गीत

सन्तोष कुमार विश्वकर्मा 'सूर्य'

झुराय गइल धनवा, झुराय गइल ना ।
देखऽ खेतवा में धनवा, झुराय गइल ना ।

फाटल खेत देखि, फाटे करेजा ।
बेबस अँखिया से, लोरिया झरे जा ।
कइसन विधना के व्यवहार रूखा ।
बरसे ना सावन, पड़ल बाटे सूखा ।

हेराय गइल बदरा, हेराय गइल ना ।
देखऽ खेतवा में धनवा झुराय गइल ना ।

बिया बालि संघे, गइल जोतवनी ।
दिनराति केतना, कइल जाँ पतवनी ।
लोरिये से देखल, सपना धोवाता ।
निरमोहि बदरा, ना तनिको मोहाता ।

डेराय गइल मनवा, डेराय गइल ना ।
देखऽ खेतवा में धानवा झुराय गइल ना ।

सूखल दहल देखेला धान के ।
रोजो के रोना इहे बा किसान के ।
जरेला भूखऽ, गरीबी की आगि में ।
का जाने का बा, किसनवन की भागि में ।

पेराय गइल जिनिगी, पेराय गइल ना ।
देखऽ खेतवा में धानवा झुराय गइल ना

❑❑

❍ तुर्कपट्टी, बन्जरिया, देवरिया

गजल

सोनी सुगन्धा

समय के चक्र से ई उम्र भी अइसे निकलि जाले।
कि सूखल रेत जइसे बन्द मुट्ठी से फिसलि जाले।

उ चाही त कुचल दिही सभे बाधा आ बिघनन के
नदी के चाह से कुछ तयशुदा रस्ता बदलि जाले।

बहुत महंगा भइल अब सौख के समान नयकन के
नया पीढ़ी कहाँ हमनी के कहला से बहलि जाले।

कि जब मालूम बा ई रात ह करिया अमावस के
त काहें केकरा खातिर चांदनी छत टहलि जाले।

भरोसा के पहिन के आजुकल पांजेब पैरन में
खुसी हमरा जरूरत से भी कुछ जादा उछलि
जाले।

बसर्ते हौसला कायम रहे कुछ करि गुजर जाईं
लकीरन के बिना भी लोग के किस्मत बदलि जाले।

सभन के वास्ते लाजिम बा मीठा प्रेम के बारिस
सभे हियरा में सोनी एक जइसन आग जलि जाले।

❑❑

❍ झारखंड

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

गीत

डॉ रजनी रंजन

(1)

शीतल मैया हई सात बहिनिया,
नेवता पठवनी बेर बेर ।
हमरो भवनवा मइया आके बिराजहू ,
रतिया करहूँ बसेर ।

लाले लाले फुलवा से डगरी सजाइब ,
दियना जराइब चहुँओर।
लाली चुनरिया मइया तोहे ओढाइब
तोहरी चरनीया अगोर।।
झांझर गेरुआ गंगाजल पानी,
खाड़ बानी करहू न देर।
नेवता पठवनी बेर बेर ।

दीन दयाल मैया फेरीं नजरिया,
हरहू मैया दुख मोर ।
हमरो बलकवा के जीवन जोगहू,
करहू दुनिया अँजोर।।

आवहूँ देवे मैया सभके अशीषिया हो,
माई तोरी महिमा बा ढेर।।
नेवता पेठवनी बेर बेर।।

(2)
आ गईली अंगना हमार हो मइया भोरे सबेरे।

मइया के भावेला गुड़हल फूलवा
बेली चमेली कचनार हो भोरे–सबेरे।

मइया के भावेला लाली रंग चुनरी
गोटा लगल जड़ीदार हो मइया भोरे सबेरे।

मइया के भावेला लाल रंग चुड़िया
शंखा शोभे दुनो हाथ हो मइया भोरे सबेरे।

❑❑

❍ घाटशिला, झारखंड

देवेन्द्र कुमार राय,

छदमी बनल बा छांह

मिलल पद का उ त ब्रह्मा के अवतार हो गइले,
उ त चलत फिरत धरती के सरकार हो गइले।

होके घुमेले उताने,केहु के उ कुछऊ ना जाने,
बुधी के भइल सभे भोथर,उ धारदार हो गइले।

कहसु बतिया हमरे टंच,करता सभे परपंच,
उन्हुका सोंच के सोंचल,लागता बेवहार हो गइले।

हमरा सोझा केहु ना ग्यानी,हम त अपने के मानी,
लागे महिमा इन्हिकर,धरती प आपार हो गइले।

देले सभका के झोल,कहेले हम हईं अनमोल,
देवेन्दर मने मने सभके,अब सरदार हो गइले।

❑❑

❍ भोजपुर,बिहार

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

राजू साहनी

गरीबी में लोग

गरीबी में लोग मजबूर हो जाला।
पढ़ी लिखी मजदूर हो जाला ।।

दू रोटी कमाए खातिर,
घर परिवार चलावे खातिर।
अपने घर सभे छोड़ देला,
अपने घर बनावे खातिर ।।

केहू दिन दुपहरिया खड़ी धूप में,
खूब पसीना बहावे ।
त केहू पोछे पनही ,
त केहू बोझ उठावे ।।

केहू दिन रात मेहनत करे,
मिटावे खातिर भूख ।
न भूख मिटे न चिंता घटे,
न मिले कबो चौन न सुख ।।

पईसा के बा खेल निराला,
गजबे खेल देखावे ।
पईसे खातिर जज बने सभ,
पईसे मुजरिम बनावे।।

गरीबी बड़ी महान ह भाई,
जे सबके अपनावेले ।तोड़
के आपन ह के बेगाना,
भलीभाती समझावेले ।।

सुख बड़ी स्वार्थी ह ''राजू'',
जे अपने के भी भूल जाला ।
तोड़ देला हर रिश्ता नाता,
घमंड में अतना चूर होला ।।

❑❑

❍ देवरिया (उ ०प्र०)

शिकायत पेटी

चंद्रेश्वर

कवि, तोहार दिमाग
खलिसा शिकायत पेटी ते
ना हो सके
कवि,तोहार हिरदा
खलिला कुंठा के कब्रिस्तान ते ना हो सके
कवि,तूँ हरमेस सूतल रहे ले
गाफिल रहे ले
गहिरारे नीन में
सपना देखत रहे ल`
ऊल–जलूल
अगड़म–बगड़म
तोहरा ते
अब ना रहि गइल
केवनो मउसम के इंतजार
पह फाटल आ बेर डूबल
तूँ नइख देखले
ढेर दिनन से
कवि, अब तोहार केवनो वास्ता
ना रहि गइल
सच्चाइयन से
तुहूँ अब
कराहत बाड़े
महाझूठ के
पहाड़ के नीचे
दबल बाड़े
कवि,तोहरा अब हरमेस
रहत बा तलाश
अवसर के,
पाला बदले में
नेता लोगन से,
रंग बदले में आगे बाड़े
गिरगिटवन से
तूँ सजा ना , बराबर चाहे ले
पुरस्कारे ––पुरस्कार
नोट के तकिया पे
सूतल चाहे ले
मुड़ी धइ के
जेकरा के गरियावल भा सरापल चाहे ले
ओकरे से गलबाँही करे ले
चूमल चाहे ले हाथ ऊहे
जेवन सनाइल बा खून से
तोहार शब्द डूबल रहत बा
एहघरी चमचई के
गाढ़ चाशनी में !
कवि,तूँ आपन हिरदा के पाट
करे किछु चाकर
तज दे ईरिखा आ कटुता
निंदारस से तनिक उठे ऊपर
जाग कवि,देखे ते
तोहरा के गोहरावत बा
तोहरे समय
करुन स्वर में
ले के नाँव
तोहार .....
कवि, साँचो
शब्दन के संगत से
अब बनि जा पहरुआ
हो जा सावधान
एह समय के बहुते
जरूरत बा
तोहार ....!

❑❑

❍ 631/58 'सुयश', ज्ञानविहार
कॉलोनी, कमता (फैजाबाद रोड)
––226028 लखनऊ

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

भोजपुरी माटी,भाषा आ हमार लेखन

विजय कुमार तिवारी

हमरा खातिर सुखद संजोग बा कि फेरु भोजपुरी भाषा के खिंचाव अनुभव हो रहल बा। एकर कारन भाषा के लालित्य,चमत्कार आ शब्द सामर्थ्य बा। दुनिया के कवनो भाषा नइखे जेकरा शब्दकोष में एक भाव,एक सम्बन्ध खातिर एतना शब्द होखे। इ सब जायेदीं,बताईं,मन खुश कब होला? तबे नू,जब आपना बोली में,आपना भाषा में कहल–सुनल जाला। एह बात से,केहू बा जे सहमत ना होई? हमरो सगें अइसने बा, खांटी भोजपुरी जिला,बलिया में जनम भइल बा। अंगरेजी हमरा कम बुझाला,हिन्दी में लिखत–पढ़त रहि गइनी।

भोजपुरी भाषा में लेखन के शुरुआत के पीछे एगो कहानी बा। आजु सुनावे में कवनो संकोच नइखे,बल्कि मन खुश बा कि जीवन के सच्चाई बतावे के मौका मिलल बा। एकरा पीछे केहू भोजपुरिया भाई के इयाद आवता। शायद हमार पहिलका भोजपुरी कविता रहे जे आकाशवाणी पटना से प्रसारित भइल रहे–

''अकसर चलेनी हम घरवा से जल्दी,उनका गली में अबेरे होइ जाला।''

शुरु–शुरु में,1981–82 में हम पटना अइनी, कबो–कबो रिक्शा से एने–ओने घूमत रहनी। मछुआटोली में निवास रहे। अइसहीं एक दिन समनहीं 'आकाशवाणी' के बोर्ड दिखाई दिहल। भीतर दूर तकले खाली–खाली लागल। एगो गोर–गार भाईजी केनियो से निकलनी आ हमरा से पूछनी,''केकरा के खोजतानी?''

हम कहनी,''ना, केहू के खोजत नइखी,अइसहीं देखे आइल बानी।'' उहाँ का पूछनी,''कुछु लिखेनी का–कविता,कहानी? हेने आईं।'' उनुका पीछे–पीछे एगो कमरा में गइनी,कुर्सी–टेबुल लागल रहे। उहें के कार्यालय रहे।हमरा बुझाइल, जरुर कवनो अधिकारी हो खबि,सामने वाला कुर्सी पर बइठि गइनी। उहाँका कहनी,'' रामजी यादव हमार नाम ह,हम भोजपुरी विभाग के काम देखेनी,जदि भोजपुरी में कुछु लिखले बानी,त आपन नाम,पता के साथ हमरा के दे दीं। अभी ना होखे त बाद में भेजि देबि। ठीक–ठाक लागी आ पसंद आई त बोलावल जाई।'' सजोग देखीं,हमनी दूनो आदमी के घर बलिया रहे। जलदिए आकाशवाणी के चिट्ठी मिलल आ हमरा हिन्दी–भोजपुरी कविता, कहानी,लेखन के प्रसारण होखे लागल। पटना में रहला के लाभ इहो रहे,जब कवनो दूर के रचनाकार समय पर ना पहुँचि पावसु त हमरा के फोन पर बुला लेत रहे लोग। ओह घरी,सीधा–प्रसारण होत रहे। बाद में रिकार्डिंग होखे लागल। हम गाँवे, बाबूजी के चिट्ठी लिख देत रहनी, प्रसारण के दिन,समय बता देत रहनी,गाँव भर में खबर हो जात रहे आ लोग रेडियो खोल के हमार कविता,कहानी सुनत रहे। ओह घरी के आनंद कुछु अउरुवे रहे।गाँव के बाबा,चाचा लोग चिहात रहे आ खूब खुश होत रहे। पटना के अखबार में,भोजपुरी पत्रिका में कहानी छपे लागल। जब्बार साहब,प्रियरंजन राय के साथे मिलिके हमनी भोजपुरी में ''कलँगी'' पत्रिका निकाले लगनी जा। खूब आनन्द रहे,खूब लिखात रहे आ खूब चर्चा होत रहे।1992 में हमार पटना–प्रवास खतम हो गइल आ भोजपुरी,हिन्दी लिखल,पढ़ल सब छूटे लागल। अब समझ में आवेला,हमार बाबा एही से नौकरी–चाकरी के आछा ना कहत रहले आ खेती–बारी के श्रेष्ठ बतावत रहले।

सेवा–मुक्त भइला के बाद फेरु से लेखन शुरु भइल बा आ एतना भरोसा बा कि फेसबुकिया लेखक त होइये जाइब। फेसबुक बढ़िया मंच बा,जे मन करे लिखीं,दू–चार लोग पसंद कइये दिहें आ मन बढ़ावे खातिर टिप्पणियों कर दिहें। हमरो कल्यान होखे लागल। लोग तारीफ करे लागल आ झाड़ पर चढ़ावे लागल। हमहूँ चढ़े लगनी। देखीं,दुनिया में आछा लोगन के कमी नइखे,कुछ लोग सलाह देबे लागल कि पत्रिकन में भेजल जाव। अप्रैल–मई–जून 2021 अंक में गुजरात के संपादक पंकज त्रिवेदी जी आपना पत्रिका 'विश्वगाथा' मे एगो हमार लिखल कहानी छापि दिहले।लोग खूब सराहे लागल।हमरा बुझाइल कि अभी कुछ लेखन हमरा में बाकी बा। एगो अउरु संजोग बनल। कनाडा के टोरंटो विश्वविद्यालय में पढ़ावे वाली प्रवासी कथाकार, उपन्यासकार डा० हंसादीप जी से साहित्यिक चर्चा होखे लागल। हमरा लागल कि इ बातचीत साहित्य में कहीं दर्ज नइखे होत,हम

उनुका से कहनी,''हमार मन करता कि अब समीक्षा लिखीं।'' उनुके कहानी संग्रह ''उम्र के शिखर पर खड़े लोग'' से हमरा समीक्षा लेखन के शुरुआत भइल। अहमदाबाद के पत्रिका मानवी में उ समीक्षा छपियो गइल। बाद में उ ''समीक्षा' जइसन मसहूर पत्रिका में छपल।

एगो अउरु संजोग देखीं, पिछला साल सितम्बर में हम बिहार,उत्तर प्रदेश गइल रहनी। तब तकले हमार लिखल कइगो समीक्षा छप चुकल आ लोगन के धियान जाए लागल रहे। छपरा के भाई विमलेन्दु भूषण पाण्डेय जी के किरपा भइल,उहाँ का छपरा से मोटरसाइकिल से आरा आ गइनी। हमरा पहिला बार समझ में आइल कि लेखन सचमुच एगो बहुत बड़ काम ह। ओह दिन हमरा लेखन के सम्मान अनुभव भइल। विमलेन्दु जी भोजपुरी के पहिला उपन्यासकार राम नाथ पाण्डेय जी के सुपुत्र बानी। उहाँका आपना बाबूजी के लिखल दू गो भोजपुरी के उपन्यास ''बिदियाँ'' आ ''महेन्दर मिसिर'' दिहनी। उ दिन हमरा खातिर बहुत महत्वपूर्ण रहल। उहाँ का साथे दू–तीन गो अउरू लेखक लोग रहे। भोजपुरी के दूनो उपन्यास पाके मन गद्‌गद हो गइल। दूनो उपन्यास पर समीक्षा लिखनी आ दूनो समीक्षा छपल।

इहो संजोगे नू कहाई, हाले में गाजियाबाद जाये के अवसर मिलल। भोजपुरी पत्रिका ''भोजपुरी साहित्य सरिता'' के संपादक आ भोजपुरी भाषा के प्रसिद्ध लेखक डा० जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी से मिले के मौका मिलल। उहाँ का आपन दू गो पुस्तक आ पत्रिका के चारि गो अंक दिहनी। एही में हमार 'महेन्दर मिसिर' वाली समीक्षा भी छपल बा। हमरा बुझा गइल बा कि भगवानो जी चाहतारे कि हम भोजपुरी भाषा में लिखीं आ भोजपुरी के सेवा करीं। इ हमरा खातिर हमार सौभाग्य बा। सुखद बा कि आजु भोजपुरी लेखन खातिर छपे के समस्या नइखे,लोग खूब लिखता आ छपता। कवनो भाषा तबे विकसित होले जब ओह भाषा के आपन साहित्य,शब्दकोष, व्याकरण आ लिखे–पढ़े वाला लोग होले। भोजपुरी दुनिया के सौभाग्यशाली भाषा ह जेकर आपन लोकगीत,संस्कृति आ संस्कार बा। हमरा खूब खुशी, संतोष बा कि हमार जनम भोजपुरी माटी में भइल बा आ हम आपना भोजपुरी माटी के नमन करत बानी।

❑❑

❍ टाटा अरियाना हाऊसिंग,टावर–4
फ्लैट–1002 पोस्ट–महालक्ष्मी विहार–751029
भुवनेश्वर,उडीसा,भारत

कनेया

उमेश कुमार राय
जमुऑव ,भोजपुर (बिहार)

का ए कनेया ! हरदम लसर –फसर रहेलू। एको बाल–बाचा नईखे बाकी हरदम लरकोरे लागेलू। तोहार काम खतमे ना होला– काकी खटिया प धुनी रावत कहली।

कनेया अकेलुआ रहली। बियाहे अइली त फिर नइहर के मुंह ना देखली। इनकर सास दु गो नबोज छोड़ के मर गइल रही। दुनो देवर इनकर करेजा के टुकड़ा रहन। सुबह से शाम तक ओही लोग में लागल रहस। इकर मरद चाउर के लदनी करत रहन, हमेशा हाट–बाजार में चकर लगावस आ खरीद–फरोस करस। घर के सभ बोझा कनेया प ही रहे।

का कही ए काकी ! बबुआजी पढ़–लिख जाइ लोग त दिन हमनी के फीर जाई तब भर जिनगी आरामे नूं रही ? आपन लगन में भोराइल रहीले।कब सुबह से सांझ हो जाला वुडईबे ना करे । कनेया काकी भीरी पीढ़ा लेके बईठ गईली ।

कनेया के दुगो देवर रहन कमल आ मदन। कमल आठ, मदन सात साल के।दुनो बहुत होसियार रहन। सरकारी ईसकूल में पढ़ात रहन। कनेया एही लोग खातिर आपन बाल–बाचा ना होखे देली। गांव–घर दांते अंगुरु काटत रहे कि कनेया कतहत करेजा कइले बाड़ी ।

कमल आ मदन धीरे–धीरे बितत समय के साथ अकिल आ रहन के मिसाल बन गइलन । कवलेज करे शहर गई लोग । कनेया के खुसी से तरवा ना रोपाय। कमल के बाबू भी जी – तोड़ मे. हनत करस। कमल आ मदन भी पढ़ाई में दिन–रात एक कर देले।

समय के पहिया घूमत रहल। कनेया के मेहनत रंग दिखवलस। कमल साहेब बन गइले।मदन भी साहेबई के तेयारी में लागल रहन। कनेया दुनो बेकत के खुशी के ठेकान ना रहल। खूब देवता–पीतर पुछलन।

कमल आ मदन साथ ही रहे लागल लोग। कमल के बियाह हो गइल । मदन के सरकारी नोकरी हो गईल । कनेया के तपसेया रंग देखवलस। अब गांव में ईकर परतुक परेला कि हर घर में एगो कनेया चाहीं। ई देवी के अवतार बाड़ी । कनेया के नाम प इनका नइहर के एको आगुआ खाली गांव से ना गइले । सुखी परिवार संस्कारी महिला के गोद में ही पलेला। ❑❑

दीपक तिवारी

भाषा भोजपुरी के,धज्जियाँ उड़ावता

देखीं सुनी आवता रोवईया,
कइसन बाउर आ गईल समईया।
जेकरा बुझाता जवन,लिख देता गावता,
भाषा भोजपुरी के,धज्जियाँ उड़ावता।

गलती पर गलती,देखा देखी होता,
माई भाषा के हो ,उजड़ता खोता।
जान बुझी के अपने हाथे,आपन बिलवावता..
भाषा भोजपुरी के,धज्जियाँ उड़ावता।

रोक टोक के ,असर ना ही होला,
जिला जवार गाँव,खराब होखे टोला।
नफरत ना करे लोग,गले से लगावता..
भाषा भोजपुरी के,धज्जियाँ उड़ावता।

लागे अभाग्य, हमनी पर हाबी,
लउकत दृश्य आज,सगरो बा भावी।
पतन बा निश्चित दीपक,अवगत करावता..
भाषा भोजपुरी के,धज्जियाँ उड़ावता।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

राम बहादुर राय

चलेके अब शहर से गांवे

चला शहर छोड़िके अब गांव चलल जाई
शहर के जिंनिगी अब नीमन नइखे लागत

गांव की सादगी शहरन से नीमन लागत बा
शहर के जइसे प्यार पर कैंची नइखे चलत
गांव में तो मां के चरनिया में जन्नत मिलेला
शहरन के त जिनिगी भी किराये पर चलेला

पिज्जा– बर्गर पर ई शहरी दुनिया चलतबा
गांव में मांई के हाथ के सोन्ह रोटी मिलेला
जहां देखीं चाचा , बाबा के नजर मिलेला
शहरन के तिरछी नजर से छुटकारा मिलत।

बन्द कमरन के घुटन से घबड़ातबाटे मन
गांव के खुलल हवा में अपन दुनिया बसेले
शहरन में सब रहिके महसूस करीं''अकेला ''
गांव मे शहर जइसन दुनिये नाही होखेला।

❑❑

❍ भरौली,बलिया, उत्तर प्रदेश

भोजपुरी लोकवार्ता के अनन्य साधक : डॉ अर्जुनदास केसरी

रवि प्रकाश सूरज

प्रस्तुत बा डॉ अर्जुनदास केसरी जी के संगे वार्ता के दुसरका आ अंतिम भाग

हमः 'लोरिकायन' आ 'विजयमल' इ दुनो भोजपुरी लोकगथन के रवुआ संकलित करके सोझा ले अइनी. इ ऐतिहासिक काम रहल बा. का अनुभव रहल कुछ बताईं.

डॉ केसरीः जी दरअसल एगो संजोग बा कि बीर लोरिक आ हमार ससुरार दुनो एके जगहा बा. आवे–जाये के क्रम में लोरिकी के गायन सुने के मिलत रहे आ बड़ी मजा आवत रहेदृ 1965-66 में जब हम चोपन में शिक्षक रहनी तबे एकरा के संकलित करे के मन बनल. हमार एगो विद्यार्थी रामकुमार से चरचा के दौरान पता चलल कि नूरे केवट नांव के एगो लोरिकी गावे वाला मल्लाह उनकर गाँव कुरहुल में रहन. जब हम पहिलका बेर उनकर आवाज में लोरिकी सुननी त एकरा के लिख के छपवावे के इच्छा आउर तेज भ गईल. नूरे केवट कहले कि लोरिकी त बहुते बड़हन बा महीनो ले गवाला आ रात–रात भर गवाला. रात ओरा जाले बाकी लोरिकी ना ओराले आउर दोसर कि एकरा के लिखे वाला भा लिखावे वाला केहू मर जायेला. हम बड़ी फेर में पड़ गईनी. हमार छात्र रामकुमार कहले कि लिखाई त जरुर बाकी कवनो हिस्सा छोड़ दियाई.

फेर का, छुट्टी के दिने हम चहुंप जाई रात भर नूरे गावस आ हमनी के सुनी जादृ 6 महिना ले इ भईल फेर भईल कि लिखाये कईसे, टेप रिकॉर्डर त रहे नादृ 8 महिना के मेहनत से कुछ भाग रामकुमार लिखले आ ४ महिना हमरा लिखे में लागल. लगभग डेढ़ बरिस ,में ४०००० पंक्ति में गाथा लिखाईल.

हमः बहुत मेहनत के काम रहल इ त, आगे बताईं कि छपाईल कईसे?

डॉ केसरीः रवि बबुआ, अबहीं त छपे के कहानी से पहिले बहुत कुछ भईल. हम देखनी कि लोरिक के जनम के गाथा त हईए नईखे. नूरे के बतवला प कुल्ह 46 गो गवैया से संपर्क भईल जेकर विवरण 'लोरिकायन' में बा. बाकिर केहू भीरी जनम के कहानी ना मिलल. बाद में घुमत–घुमत रोबेर्त्सगंज के भीरी घुरमा गाँव के दूधनाथ जादो के जरिये जनम के कहानी मिलल. कुल्ह मिला के लगभग 44000 पंक्ति में गाथा पूरा भईल. एकरा में ४ साल 1965 से 1969 तक लागल. हम दैनिक 'आज' में विन्ध्य अंचल के जनजातीय जिनगी प ढेर कुछ लिखनी ओही दौरान लोरिको प लेख निकलल जवन चरचा में रहे. मोहनलाल गुप्त (तत्कालीन संपादक 'आज') के हम लोरिकायन देखवनी त उहाँ के हमरा के हजारी प्रसाद द्विवेदी भीरी भेज दिहनी. पाण्डुलिपि देख के द्विवेदी जी कहनी कि एकरा प पीएचडी हो सकेला बाकिर बी एच यू से ना कहे कि हमार अंक कम रहे. द्विवेदी जी के राय प हम काशी विद्यापीठ के वीसी राजाराम शास्त्री से मिलनी. कईसे कईसे पीएचडी में दाखिला भईल. हम रेलवे के नोकरी छोड़ दिहनी. परिवार के खरचा चलल मुश्किल रहे. खैर, संघर्ष के 7 साल बाद पीएचडी मिलल. भाई ठाकुर प्रसाद सिंह, तत्कालीन निदेशक, उ प्र हिंदी संसथान पाण्डुलिपि देखनी. ओकरा के छपवावे के सलाह दिहनी. ओही समय हमार पाण्डुलिपि के राहुल सांकृत्यायन पुरस्कारो हिंदी संसथान से मिलल. ठाकुर प्रसाद जी छपवावे खातिर कुछ जगहा बातो कईनी बाकी छपे के केहू तईयार ना भईल. बाद में सरकारी योजना के तहत आवेदन दिहनी, कुछ पईसा मिलल त 'लोरिकायन' अंत में हमरे 'लोकरुचि प्रकाशन' से छपल. उ 1980 के साल रहे किताब जरुर छपल बाकी हम कर्जा में ऊब गईनी.

हमः 'लोरिकायन' के संकलन से छपवावे तक के जतरा बहुत संघर्ष भरल आ रोचक रहे. इ महान काम खातिर भोजपुरी साहित्य समाज रावुर कृतग्य रही. 'विजयमल' त पहिलका बेर रवुवे संकलन कईले बानी. ओकर बारे में कुछ बताईं.

डॉ केसरीः'विजयमल' के संकलन के दौरान ओतना कठिनाई ना आईल काहे कि 'लोरिकायन' के संकलन के अनुभव हमार भीरी रहेदृ 1977.1978 में देओरिया जिला में एगो राष्ट्रीय आदिवासी सम्मेलन भईल रहे ओहिजा हमार भेंट नागनाथ हरइया के गनेश प्रसाद

खरवार से भईल जे बतवनी कि उहाँ के गाँव के मोहन बीन .विजयमल' गावेले. बाद में पता चलल कि मोहन बीन अहरौरा में रहे लगले त कुछ समय बाद गनेस जी के संगे हम अहरौरा गईनी. ओहिजा तलाब किनारे एगो शंकर जी के मंदिर रहे ओहिजा अनवरत रूप से तीन–चार दिन में मोहन जी के गावल गाथा लिखायिल. हम कुछ आउर आदिवासी क्षेत्र के गवैया से मिले के चाहत रहीं तब ले पता चलल कि पहाड़ी दुर्गम गाँव घटिहटा के गोगे अहीर के पूरा गाथा याद बा. गोगे गाथा गा के सुनवले आ टेप रिकॉर्डर त रहे ना एह से हम लवट के कहानी के रूप में 'विजयमल' के गाथा लिखनी. पता चलल कि मोहन आ गोगे के गाथा में अंतर बादृ 6 महिना बाद टेपरेकॉर्डर के इंतजाम भईला प हम फेर बहुत संघर्ष से गोगे के गाँव गईनी. दो दिन अनवरत गोगे गवले आ हम टेप कईनी.हम गोपीचन सोनार, रामदास कुर्मी, रामनंदन नाई, रामदेव, रामदास इ कुल्ह गायक लोग से गाथा टेप कईनी.गते गते लिपिबद्ध करत चल गईली आ बीच बीच में अमृतलाल नागर, डॉ विद्या निवास मिसिर, ठाकुर प्रसाद सिंह आदि विद्वान लोग सलाह देत गईनी. 'विजयमल' प हमार समझ से एह से पहिले कवनो संकलन के काम ना भईल रहे. ओह समय हमार भीरी रिकॉर्डर, कैमरा आदि संसाधन के कमी रहे एह से इ कुल्ह में हमार बहुत मेहनत करे के पडल.

हमः रावुर भोजपुरी लोक गथन के संकलन करे के एगो अलगा गाथा बन सकेला. साँचो एकरा से हमरा बहुत प्रेरणा मिलल.

डॉ केसरीः जी, भोजपुरी के इ दुनो लोकगाथा आ जनजातीय साहित्य के संकलन से हमरा इ बुझाईल कि भोजपुरी में मौखिक साहित्य प्रचुर मात्रा में बा बस सहेजले बिना उ सोझा नईखे आ सकत. अब त संसाध ान बहुत हो गईल. आधुनिक तकनीक आ गईल. अब रवुआ आ आउर नवहा पीढ़ी के लोग भोजपुरी साहित्य के बढ़नती खातिर प्रयास करे. हमार सलाह रही कि रवुआ आपन करियर आ काम भोजपुरिये के क्षेत्र में करीं, मातृभासा के सेवा करीं.

हमः जी सर, रावुर आसिरबाद बा. कुछ आपन संस्मरण बताईं भोजपुरी साहित्य सेवी लोग आ संस्थन के संगे.

डॉ केसरीः अब त ओतना याद ना रहे बाकिर हं जब हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रहीं तब कई बेर बिहार गईनी. बहुत उत्साह से भोजपुरी के कई गो गोष्ठी, कार्यक्रम में शामिल रहीं. पाण्डेय कपिल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामजियावन दास बावला जी, विवेकी जी, ठाकुर प्रसाद सिंह जी के संगे के बहुत मीठ मीठ प्रसंग याद आवेला. एगो बड़ा बढ़िया साहित्यकार रहीं जे बैंक अधिकारी रहीं उनकर नांव नई खे याद आवत.

हमः रावुर साहित्य के सेवा करे के जतरा जेतने लमहर बा ओकरो से लमहर रावुर रचनाक्रम बा.

डॉ केसरीः जी जब ले हम सक्रिय रहनी हर साल एगो नया किताब के संकल्प रहे. कुल्ह मिला के 65 से उपर किताब आ हजारो आलेख आ चुकल बा. 'लोकवार्ता शोध पत्रिका' पिछिला 43 साल से लोकवार्ता शोध संसथान से छप रहल बा. बीच में कोरोना में ठहराव आईल आब फेर से अंक निकाले के योजना बा.

हमः हम रावुर भोजपुरी साहित्य में सेवा के नमन कर रहल बानी आ इ कामना कर रहल बानी कि रवुआ आगे आवे वाला कई कई बरिस तक नवहा पीढ़ी के भोजपुरी साहित्य से जुड़े के प्रेरणा देत रहब.

(लेखक मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार के सदस्य बानी. सम्पर्क सूत्र– 9891087357)

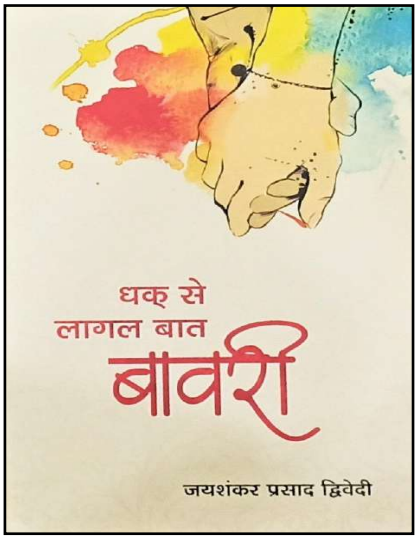

तीन गो कविता

अंकुश्री

ढिबडी

चुल्हानी क एक तरफ
बरत रहे ढ़िबड़ी ।

अन्हार हटावे ला
बरत रहे ढ़िबड़ी ।

तेल पिये बाती आ
बरत रहे ढ़िबड़ी ।

जरत रहे बाती आ
बरत रहे ढ़िबड़ी ।

❑❑

पत्थर कोइला

करीआ कोइला
ओकर रंग बदलल
जर के लाल हो गइल ।

जतना ठंडा रहे
लहलहाते ओतने
गरम धमाल हो गइल ।

केहू के गरमी
देर ले ना ठहरे
त उहे हाल हो गइल ।

पत्थर जस कोइला
कस आग के इयारी
ओकर काल हो गइल

❑❑

बेटी के बिदाई

मांगे सेनुर पड़ल
गोरवा पलकिआ में
अंखिआ में लिहले बसाई।
घरवा–दुअरिआ जवन
बबुनी तू खेललू
ई तज देलू तिरथ बनाई।
पाल–पास बड़ भइलू
घरवा बिसार दिहलू
घर दोसर लेलू अपनाई।
माई साथ दुअरा तक
भाई–बाबू पक्की ले
भउजी करस अंगने बिदाई।
नया माई, बाउजी,
आ गोतनी–भसुर के
लीह दीदी–भइया बनाई।
ननदी बन जाले जे
मुंहजोरी बहिनिया
आ देवर बनल छोट भाई।
करिआ कोइलिआ के
बोलिए से पुछल जाला
लीह मधुर बोलिआ बनाई।
टेढ़–मेढ़ जिनिगी बा
चलीह फूँक रहिआ
ई बतिआ जन दीह भुलाई।

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी, सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

बंधल जल

दिनेश पाण्डेय

''दस दिन दसईं, पाँच दिन असहीं, सोरह दिन सोहराई, छौवे छठ, दसवें गंगा नहान....।'' एह चिर परिचित आ हर बरिस दोहरावल जाएवाला फकरा के पढ़े के पीछू के बाबा के मकसद तब कहवाँ बुझाइल रहे। ऊ त बाद में बुझाइल जे एकर व्यंजनामूलक अरथ के छोर धान के पियराइल पउध आ आसन्न धानकटनी के हुलास से जुरल ह। बाकी गंगनेहान के जिकिर आवे से बाबा के ध्यान अचके एह लोककथा के इर्द–गिर्द चक्कर खाए लागल रहे। एह कथा के उहाँ का केहू अवरे के मुँहें सुनले रहीं आ उहो केहू अवरे के मुँह से सुनले होंइहनि। ए से एकर आदिबकता का बारे में निश्चित तौर प कुछ कहल ना जा सके।

उहाँ का बिल्कुल एक कथक्कड़ का मुदरा में आ गइल रहीं आ शुरू में भाखल फकरा का छोर पकड़ के आगा बढ़ गइनीं।

+ + +

पंडिताइन भोरे–भोरे अँगुरी के पोर प गनली। छठ से आजु ले ऐन दसवाँ दिन भइल। एह हिसाब से गंगा नहान अजुए ह आ एह गनना में कौनो मीन–मेख ना हो सके। एकर तस्दीक एहू बात से होता कि सँड़क प लोग–बाग मुँहअन्हरिए से सिनहा घाट जात नजर परे लगलें। उनकर मेहररूई ललसा के सोती में पानी बढ़िआए लागल रहे आ अब त ओह में चकोहो उठे लागल रहे। पानी अड़ार के बहरसी छलकल आवे। गंगानहान के बनिस्बत कवनो पूनलाभ तकरा दूर–दूर ले के कहो, अगल–बगल ले नइखन। उनकर ई पोख धारना ह कि सरब पाप–ताप, पीर–पराछित बदे गंगोदक से परतर कवनो साधन नइखे। गँवई स्त्री के जिनिगी में परब–उतसो, मेला–मजमाँ, तिरिथ–बरत के तेज खिंचाव का पाछू कइयक सामाजिक, पारिवारिक कारन आ ते से उपजल मनोदशा मुख ह। पंडिताइन मने–मने सारा मंसूबा बान्ह लेले रही। सातू–पिसान तैयार रहे। झाँपी में रखल पोटली में नन्हका के जटा–चीपड़ अब ले समर्पित ना भइल, इहो बात जेहन में रहे। हे गंगा मइया, छिमा, एकरा के अवमानता जनि बूझबि। फेरु उत्तर दिसि हाथ उठा के संपुट बनावस। उनके होठ से मंद्र–करुन स्वर में गंगा गीत ससरे लागे–

''धन–धन गंगा मइया धारा
धारा ह अगम अपारा।''

पंडिजी बहरसी से गरमइले घर में अइले त गीत के अनुगूँज अब ले बाकी रहे। ऊ सतर्क भ गइले। साफ लागत रहे कि उनका चेहरा प सतर्क–बेरुखी के भाव बा। पंडिताइन के ललक से लाल हो आइल मुँह से मुँह चोरावे के उनकर पुरान बीमारी फेरु उपट आइल। ई सचहूँ निर्दोख अनजानापन हो सकेला, एक तरे के आत्मसमर्पण हो सकेला भा खालिस काँइयागीरी, पंडिताइन उनकर एह 'कछुआ मुदरा' से अगते से वाकिफ रही आखिर उहो उनकर अर्धांगिए त रहली।

पंडिताइन चहकल अस बोलली– ''आजु गंगा नहान ह नु।''

पंडिजी– ''हँ।'' उनकर सुर सपाट रहे जाहिर रहे जे ऊ बात पनपे तेकरा पहिले ओकर बढ़ोतरी के सरबस संभावना खतम करे के दाँव फेंक दिहले रहन।

पंडिताइन के उमंग थोरे आहत भइल बाकी ऊ का त कहल जाला नु कि लालसा के तेज धार कवनों रोध कहाँ मानेला? ऊ एक चीन्हल–जानल निर्भयता के मुखौटा पेन्ह लिहले रही जवना से पंडिजी के जबर इष्ट देवो अक्सर पनाह मांग लेत रहन।

''हँ का? कुछ इयादो बा? नन्हे के लापर के जटा अब ले धइले बा, मनता ना पूजल। बढ़िया मोका रहे।''

पंडिजी झुंझलइले– ''तूहूँ कबो–कबो बेवकूफी के बात काहे क जालू? हेह धकमपेल में तहरा मनत के सूझत बा? आरे, जा नीके नहा–धो लऽ, पूजा–पाठ क लऽ। बात खतम। का धइल बा गंग. नहान में? मन चंगा त कठवत में गंगा। रहल बात मनत के, त बाद में देखल जाई।''

अइसे त हर मेहरारू का नजर में तेकर मरद दुनिया के सभसे बड़हन मूर्ख हवें बाकी पंडिताइन के ई पैमाना बहुते छोट लागल। ऊ एकदमे बौखला उठलीं– ''हँ–हँ, काहे ना। एगो रउए त बुधिगर बाँचल बानीं सगरी दुनिया में। हतिना लोग मुरुखे बा नु?''

पंडिजी हेह छोट–मोट व्यंग्य बान से धराशायी हो खेवाला जीव ना रहन। ऊ बेगर लाग–लपेट के सकार लिहले– ''हम बुधिगर बानीं कि ना ई बात त हमहूँ नइखीं जानत बाकी हउ बादवाला बतिया जवन कहलू नु ऊ सइ फीसदी साँच हँ।''

पंडिताइन के नजर में ई बड़बोलापन रहे। जब ले पंडिजी आपन बकतब के समरथन में सबूत ना पेश क देस तब ले एकर सत्यता संदेहित रही। एही बात प दूनोजन में ठन गइल।पंडियोजी

ठान लिहले रहन कि पंडिताइन के आँखि प जवन अन्हर–पट्टी बा ओकर उतरल जरूरी बा। ऊ चुपचाप उठले आ पंडिताइन के पीछू आवे के इशारा कइले।

+ + +

गाँव के पछिमाही छोर प एगो पोखरा रहे। पोखरा पुरान रहे, ओतिने पुरान जतिना कि गाँव। गाँव के निर्माण में एह पोखरा के मुख भूमिका रहे। जस–जस गाँव के बढ़ोतरी होखे पोखर के पेटी गहिरोर भइल जाय। भिंड प समृद्धि के चिन्हाँसी बिछिलल जाय। एकर चपुटाही गुलमोहर, अमलतास, बर, पाकर, नीम के गझिनता से भर के इतराय। भिनुसार से बितली राति ले, गाँव के लोगन बदे पोखर, समय बितावे के मनसायन जगहा रहे। बाकी पिछला दशक में ना जाने कवन हवा बहल कि गाँव के सेहत में गिरावट आवत गइल। दिन–ब–दिन कवनों घर में ताला ढुल जाय। जे नीमन रहे, जे सक्षम रहे ऊ चल जाय, केहू सबखे त केहू बेबसी में। हिहाँ बचले कुछ नकारा किसिम के लोग, जइसे कि राँड़, बाँड़, भाँड़ आ साँड़। जनते होखबि जा कि हिनकर एक सीमा से अधिका बढ़ोतरी असहज हालात के बोधक ह। पोखरो के स्वास्थ्य ठीक ना रहल, साँड़ भिंड अखाड़ जास, हार–के–हार भँइँ खुर से सीढ़ी रउँद जास, सगरे खुरकोंचाह, खुराठी उभरत गइल। भिंड प के कामू फेंड़ कम परत गइले आ छँहिगर जगह भेंटल दुरलभ भ गइल। पोखर गड़ही, खलेटी का सकल में ढलत गइल। एकरा मध्य में थोरिका पानी अभियो शेष रहे जवना में हरियर सेवार आ जलकोबी के जंगल उमजल रहे।

+ + +

पंडिजी के चाल में गम्हीरता रहे। हाथ में लोटा आ काँख त धोती के लपेटा दबले, आगे–आगे ऊ आ पाछू पंडिताइन। पंडिजी पिनपिनइले सीधे खलेटी में उतरले। बन्हल जल आ सेवार संजाल के परवाह कइले बिना ऊ दू डुबुकी लगवले आ एक लोटा पानी लिहले तीर प आ गइले। देखेवाला भँउचक। ''छी–छी, आजु गंगनेहान का दिने पंडिजिउआ के कवन कुमति लागल। जवन जल में अनदिनों जाए के जीव ना करे, कहईं गफलत में भा मजबूरन उतरे परल त घोंघा, जोंक आ चुनचुनी के असर से बाँचल संभव नइखे, ओह में पंडिजिउआ, ओहू ऐन गंगनेहान का शुभ दिने बूड़ी मार लिहल, शिव हो, शिव हो।'' कुछ लोग जिज्ञासावश पूछहूँ के कोशिश कइल बाकी पंडिजी आपन काम में अतना तल्लीन रहन कि केहू के बात सुने के फुरसत उनुका भिर कहवाँ रहे? ऊ कुछ मंत्र अस बुदबुदात पोखर के चक्कर लगवले फेरु हुँहवें चरत एगो गदहा के प्रदक्षिणा कइले। गदहा के मस्तक के जलाभिषेक लोग पहिला बेर देखल बाकी उनका आगा–पीछा सोचे के अगते ऊ गदहा के सिर से एक चुटकी बार नोच के मंत्र बुदबुदात जा चुकल रहन।

पंडिताइन के पहिला बेर आपन बेवकूफी के अहसास भइल। हे बिधाता, हे गंगा मइया, भारी पाप भ गइल। ऊ अब ले बूझ ना पवली। ऊ जवना के पंडिजी के सहजबौरी समुझत रहली दरअसल ऊ त खालिस मनोब्याधि रहे। इनकर पेंच त पुरहर ढक भ गइल। एकर जरिको अनुमान पि हले से रहित त ऊ अपन जिद आ अइसन बेहवार से परहेज करती। पंडिजी के जाए के दिशा में घ ुरिघुरि देखत ऊ हुँहवे नीम के सोरि प थसक गइली। उनका टांग में अतिना तागत ना रहे कि ऊ लपक के पंडिजी के पीछू भागस।

एह सारा माजरा के देखनिहार आन लोगन के सोच के दिशा दोसर रहे। पंडित अतिना बुरबक त ना हवे। उनकर गिनती मानीन ज्ञानिन में होला। काल–महूरत ओगैरह के जतना जन्कारी उनुका पाले बा हेह पँचकोसी में केहू का लगे नइखे। आज हेह गंगनेहान के मंगल महूरत में उपर से लागेवाला उनकर अइसन निरघिन करम के जरूर कुछ गोपन भेद बा जेकर फल निसंदेह उत्तिम होखी। इहो हो सकेला कि असों गरह–गोचर के स्थिति अइसन हो खे जे में गंगाजी के बजाय पनरोह नहान के जोग बनत होखे। अतना त तय बा कि ए से प्राप्त हो खेवाला फल आला दरजा के होखी ना पंडित छोट–मोट चीज प लूझल होखस अइसन त आजु ले ना लउकल। ज्ञान के पटरी खुलते लोगन के सोझे सारा रहसलोक भक से इँजोर गइल।

बात काने–कान पसरल। आगे के कुछ घड़ी में हुँहाँ बिचित्र नजारा रहे। पोखरा का ओरि लोगन के ठट्ट–के–ठट्ट उमड़ल आवे। पोखर के बंधल जल में नहाए खातिर किचाइन मचल रहे, मारा – मारी, धक्कमपेल। पंडिजी से जलाभिषेक पावेवाला गदहा अचके देवत्व पा चुकल रहे। ऊ ध के ओहिजे खूँटा गाड़ के बन्हा गइल रहन। लोग नहाय, निकले, गर्दभदेव प एक लोटा पानी डाले, उनुका माथ प सेनुर–रोरी लावल जाय आ जतना संभव हो सके उनकर रोआँ नोचा जाय। का त सारा सौभाग्य आ समृद्धि के बीजसूत्र ओही रोआँ में मौजूद रहे। कुछ देर में गदहा भुंड हो चुकल रहन। उनकर बेतरहे डँकरे के आवाज रह–रह के सुनाय।

+ + +

पंडिताइन गँवे–गँवे सहज भ गइल रही। ऊ उठली आ उत्तर दिसि का ओरि संपुट मुद्रा बना के माथ नेवइली– ''हे गंगा माई, आभार।''

पटना,बिहार

बनल बाबा पर बनल कविता

डॉ सुनील कुमार पाठक

ए बाबा!
तनीं जवान
मत बनीं।
मीठाह–मुलायमे रहेब
त मान पाएब,
मानी बनब
त माहुर हो जाएब।
मुड़ी झंटउवल के
अब राउर उमिर
नइखे नू रह गइल!
हुरपेटउवल–खेल खेलब
त अकिले हेरा जाई।
सभे जानत बा कि
रउआ अब का
बनेब भा बिगड़ब ,
जवन बने के रहे
तवन त बन गइनीं,
जेतना बिगड़े के रहे
बिगड़ गइनीं य
अब ना बन पाइब
ना बिगड़ पाइब।
मन मसोस के रहि जाला
कवनों मनई
जब ऊ ना ठीक से बनिये पावे
ना ठीक से बिगड़िये पावे,
दोसरा के बिगाड़हूं लायेक
बूता ना रहि जाला जब
तब आउरो बिनबिनाए लागेला।

(2)

नवही बड़ा लहार लेले सं
जब सिंह कटा के बछड़ू बनल–
केहू के बिनबनाइल आ
पिनपिनाइल देखेले सं।
फटाक से ललकी गमछी देखा देले सं
भा करिअक्की छतरी तान देले सं
बाबा उछाल मारे लागेले।

(3)

बीछी के मंतरे ना जानल
आ सांप के बियरी में हाथ घुसावल
बहुते मंहगा पड़ि जाला कबो–कबो।
आपन कमजोरियो जानत
धधा आ फफा उठल
झंखावे लागेला,
ना घोंटते बने
ना उगिलते,
बाबा के पगड़िया
उड़ियाये लागेले।

(4)

भरम जब ले बनल रही
तबे ले बाबा के मरजाद बा,
ना त मकई के बाल लेखां
जब छिलिका उतर जाई
त बाबा के पकठाइल दाना
लउक जाई
उनकर अज्जू बनल छूट जाई।

(5)

बाबा त बबे बाड़ें!
रहिहें नातियने में
आ दिन– रात गरिअइहें
ओकनिये के–
त भला ऊ का गदनिहें सं?
नतियो सीख लेले बाड़े सं
बाबा के साथ जीये के
सट के सटावे
सहकावे–सटकावे के,
ऊ जान गइल बाड़े सं
कि बाबा हिकभर बउइरइहें तबे
नेवर पड़िहें,
बाबा के सिकहरा चढ़ा के
ऊ शेक्सपीयर बना देले बाड़े सं,
बाबा सांचो बउराये लागल बाड़ें,
धीरे–धीरे हांफत माथा डोलावत
आंवक में आवे लागल बाड़ें।

पटना,बिहार

सचहूँ 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया'

मीनाधर पाठक

संस्मरण हिन्दी साहित्य के एगो अइसन गद्य बिधा ह जवन अपनी स्मृति प आधारित ह। कई बेर ई अत्यंत व्यक्तिगत भी होला आ सामाजिक चाहे राष्ट्र से जुडल भी। बाकिर केतनो व्यक्तिगत संस्मरण होखे, ई गद्य साहित्य के बिधा कहाला।

जदि देखल जा त हिन्दी के संस्मरण लेखक लोग के एतना नाँव बा जे लिखल जा त एगो बड़हन सूची तैयार हो जाई। बाकिर भोजपुरी के ई पहिला संस्मरण से हमार भेंट भइल ह 'भोजपुरी साहित्यांगन' पर। 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' किताब के ई शीर्षक अपनी ओर आकर्षित करता। ए शीर्षक में 'ऊ' विशेष बा। 'ऊ' माने जवन चीज जइसन कबो रहे, अब ऊ ओइसन नइखे। मने 'ऊ' पचरुखया अब नइखे भेंटाए के। शीर्षक के 'ऊ' में कुच्छु अइसन टीस बा कि ओके महसूसत घरी शैलेन्द्र के लिखल 'तीसरी कसम' फिलिम के एगो गीत मन परे लागता, "चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजरे वाली मुनिया।" जइसे ई पिंजरे वाली मुनिया बरफी, कपड़ा आ बीड़ा के रस ले लि. हले रहे ओसहीं समय रूपी मुनिया जिनगी के दिन से रस ले के ऊड़ि जाले आ फेर ऊ दिन महिना साल जिनगी में ओ रूप में लवटि के ना आवेला। हँ, 'ऊ' हमरी आपकी स्मृति की मंजूषा में तहा के जरूर धरा जाला आ समय समय पर हमनीके ओ मंजूषा के खोलि के अपनी स्मृतियन के झार पोंछि, घाम देखा के फेर से तहा के ध देनी जा। एमें दुःख, सुख, निरासा, बिछोह, मिलन, जीवन के सगरो रंग रहेला। ई संपदा त सभके लगे रहेला बाकिर जे कलम के घनी मनी बा ऊ एकरा के कागज पर उतार लेला नाहीं त ई स्मृति के संपदा स्मृतिए में लोप हो जला चाहे चिता की अग्नि में स्वाहा हो जाला।

खैर! 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' ओही स्मृति के शब्द रूप ह जवना के डॉ० रंजन विकास जी अपनी लेखनी के माध्यम से उकेरले बानी। एके पढ़त घरी लेखक के बचपन से ले के भोजपुरी साहित्यांगन की स्थापना तक उनकी यात्रा ले वर्णन बा। पूरा संस्मरण में लेखक के जीवन के बहुआयामी रूप देखे पढ़े के मिलता। पचरूखी के सौन्दर्य वर्णन त अइसन भइल बा कि पढ़त–पढ़त पाठक के मन एक बेर पचरूखी के देखे खातिर लहक उठता। पचरूखी गाँव, ओड़ुजा के चीनी मिल, बाजार, टीसन, इस्कूल, सब कुछ आँखी के आगे सोझा लउके लागता।

आत्म संस्मरण लिखत घरी विकास जी खाली अपनी माता–पिता, भाई–बहन, सखा ले सीमित नइखीं रहत, आपन हर छोट बड़ रिश्ता, जैसे– ननिआउर, मौसीआउर फुफुआउर, गाँव गिराँव, टोला जवार, हर हरवाह सबके साथे आपन नेह नाता के बड़ी भावपूर्ण शब्द चित्र उकेरले बानी। दूनू फुआ वाला अध्याय स्त्री मन के ढेर भाव समेटले बा।

अपनी बाति में आप लिखतानी कि "हमार आत्म संस्मरण' फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' में मन के उपराजल कुच्छु ना ह बलुक जिनगी में जे हमार देखल भोगल जथारथ बा ओकरे के उकेरे के कोसिस कयिलेबानी।" आगे पचरूखी के बारे में उहाँ के कहतानी, "पचरूखी एगो छोटहन कस्बा भइला के बादो हमरा खातिर बहुते मनोरम, रमणीक आ खास रहल बा।" राउर ई बाति पढ़े वाला के खूब महसूस होता विकास जी।

"पचरूखी मन्दिर के मठिया से सटल पोखरा के भिण्डा प के बाबूजी के आवास, भिन्सहरे आ साँझ देर राति ले पाँड़ें जी के कसरत कईल, साँझ सवेरे मंदिर में पूजा आरती भोला बाबा आ देवधारी बाबा के घंटी आ शंख बजवला के मधुर आवाज बहुते दूर ले गूँजल.क्यू मार्का बीड़ी कारखाना आजो ओसहिं बा जइसे बचपन में रहे।" ई पैरा (पेज न० 19) पचरूखी के प्राकृतिक, आर्थिक के साथे ओकरी आध्यात्मिकता आ संगीतमयता से भी परिचित करावता।

बिकास जी के भाषा निर्झरनी तरे कल कल बहतिया। बालपन के चुलबुलापन आगे चल के गंभीरता में बदल जाता।अंग्रेजी के शब्दन से कवनो परहेज नइखे लेखक के। ई पुस्तक पढ़त घरी गँवई तीज तियुहार, पहनावा ओढ़ाव, खान पान, सवाद. गुन ढंग सब कुछ के जानकारी मिलता। किताब पढ़त पढ़त पाठक के आपन स्मृति जाग जाता आ ओकर हाथ थामि के गाँवे की ओर ले जाता।

कुल मिला के ई किताब लेखक के अबतक के जीवन के एगो समृद्ध दस्तावेज बिया। भूमिका में आदरणीय भगवती प्रसाद द्विवेदी जी बड़ी सुघड़ता से पूरी किताब के सार ले लेलेबानी। सचहूँ में ई किताब 'लोक संस्कृति के जियतार झाँकी बा।' विकास जी अपनी माताजी के समर्पण से ई किताब के आरम्भ क के पिताजी की रचना संसार पर इति कयिले बानी। ए किताब पर लिखे खातिर बहुत कुछ बा बाकिर रउरा सब पढ़ि के एकर आस्वादन करीं।क. ीनि के चाहे भोजपुरी साहित्यांगन से डाउनलोड क के पढ़ीं लोग आ लेखक के ए कृति खातिर बधाई दी सभे। हमरी ओर से भी अनघा बधाई पहुँचे।

किताब –'फेर ना भेटाई ऊ पचरुखिया'
लेखक –डॉ० रंजन विकास जी।
प्रकाशक –सर्वभाषा ट्रस्ट।
मूल्य–250/–(पेपरबैक) आ 400/–(हार्डबाउण्ड)

❑❑ ❍ उ0 प्र0

डॉ राजीव उपाध्याय

तीन कविता

1. बखरा

तोहरा बखरा के सूरुज तोहार
हमरा हके चान के चकवार
केकरा बदे दिन–रात होई
केकरा सुकवा केकरा सोमार।

लागी बखरा जब माटी के लागी
कुछ ढेला तोहके भेटाई
कुछ ढेला हमरी ओर ढिह्मलाई
बाकी बावे बहुत कुछ
ऊ कइसे बटाई?

हमके लेके साइकिल पर
गाँव–गाँव गली–गली घुमवल
दुनिया के देखे के आँख बनवल
का होई ओकर?

इया के कहतरी से
चोरा–चोरा हमके सार्ही लैएनू खियवल
गलती हमार बाकिर
माई के हाथे तूँ ही पिटइल।
टाट के झगरा
स्कूल के पटरी
फाटल किताब
अउरी दियरी के तरजूईय
बहुत कुछ बावे
कइसे बँटाई?

कइसे बँटाई
ऊ बीतल दिन
अउरी तोहार बनावल मन
जेवन साझा के बा
का बखरा लगावे जानेला
पंच जेवन दुआर खड़ा बा?

2. का करीं?

देखत होई लोग बहुत
सपना अँखियन में
अँखियन में अंजोर बहुत बा।

'चुप रहेला बाकिर
दू अँखियन के दियरी में
दरपन जेतना शोर बा।

का करीं?
चुप रहीं
कि अँखियन के चुप करीं हम?

'दुनिया देखी जेतना, दू आँख कहाँ देखी?
दू आँख देखी जेवन, ऊ सभ कहाँ देखी?'

3. जेंवर बरल आसान कहाँ बा?

जेंवर बरल आसान कहाँ बा?
कई मुट्ठा के सन
जब एक जगह बटोराला
फेर सभ एके में बोराला
तब जाके कहीं जागेला उमेद
कि सतमेझरो से बहुत कुछ
नीमन बनि जाला।

आदिमी के मन उहो जोड़ि लेला
जेवन कबो ना बन्हा सकेला
रसरी के गाँठ से केवनो!
फेर ई जतरा
एतना कठिन कइसे हो गइल?
कि आज सभकर नाम, गाँव
खाली नइखे बँटल
बँटि गइल बा
सभ चिन्ह ओकरी पहचान के
अउरी ऊ सभ कुछ ओढ़ लेले बा
जेवन ओकर न हऽ!

❑❑

❍ बलिया,उ0 प्र0

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

हमरै खातिर

विष के गगरी ओकर बाबा, हमरै खातिर ।

हम जोड़ीं तिनका तिनका
उ एक्के फूँक उड़ावै।
जानीला बरियरा चोर
ह ठढ़े सेन्ह में गावै।
सब अनजा के चोकर बाबा, हमरै खातिर।
विष के गगरी ओकर बाबा, हमरै खातिर ।

घर बहरा भइल बरोबर
सगरों मचल चिलम चिल्ली।
दोसरा के का बतिआईं
अपनों उड़ावै खिल्ली।
झूठ बतावै नोकर बाबा, हमरै खातिर ।
विष के गगरी ओकर बाबा, हमरै खातिर ।

उकठा–पंइच,तोर–मोर
उ करत देखइलें सोझे।
मनमरजी कुछहू बोले
आ मुँहवो लगलें नोचे।
मय दुनिया के ठोकर बाबा, हमरै खातिर ।
विष के गगरी ओकर बाबा, हमरै खातिर ।

❑❑

❍ गाजियाबाद ,उ0 प्र0

प्रोफेसर अखिलेश चन्द्र

हम न रहब तोहरे बिन

हम न रहब तोहरे बिन सुन ल मोरे बलम जी
सुनब कुछ नइखे चाहे कइलै कवुनों जतन जी
हम न रहब तोहरे बिन ।

तोहरे बिन नैहर न नीक लागे
ससुरे में रहीं त रतिया भर जागे
अब त सावन में मेहंदी भी हमके चिढ़ावे
आइजा कवुनों कर जतन घर मोरे बलम जी
हम न रहब तोहरे बिन ।

नहिरे में भौजाई रोज ताना अब मारे
ससुरे में देवरा मोहे कनखिये से निहारे
बीतल जाला उमरिया मोर नदियां के तीरे
कैसे खेलिहै गोदी में ललन मोरे बलम जी
हम न रहब तोहरे बिन ।

सात सुर बा सातें बाटें रंग
सात फेरा लेके भइली हम संग
भरोसा रहल दीया–बाती जैसे रहिबे
छूटल जात बाटें कोहबर क कसम मोरे बलम जी३
हम न रहब तोहरे बिन ।

हम न रहब तोहरे बिन सुन ल मोरे बलम जी
सुनब कुछ नइखे चाहे कइलै कवुनों जतन जी
हम न रहब तोहरे बिन.।

❑❑

❍ आजमगढ़

मनोज भावुक

कुक्कुर पर सिनेमा आ सिनेमा में कुक्कुर

कुक्कुर, कुत्ता, डॉग, टॉमी, डॉगी, शेरु जवन नाम से रउआ जानत होईं बाकिर सभका जिनगी में कुक्कुर होखबे करेले सन। हमरा जिनगी में त ढेर बाड़न स। हमार एगो दोहा बा –

भावुक छोटे उम्र में एतना फइलल नाँव
कुकुरो पीछे पड़ गइल, कउओ कइलस काँव।।।

गाँवे–गाँवे कुकुरन के बटालियन देखले होखब। अब त गाँव से लेके राजधानी ले आ रोड से लेके बेड ले बाड़न स। हर गली–मोहल्ला में। भोजपुरियो समाज में, अफरात। केहू के नीचा देखावे खातिर केतनो नीचे गिर जाय खातिर गिरोह बान्ह के तइयार।

साहित्य से लेके सियासत तक कुकुरन के भरमार बा। एकनी के ट्रोलर ग्रुप आ ट्रोल कंपनी बनवले बाड़न स। झूठ के साँच के रूप में प्रस्तुत करे में एकनी के महारत हासिल बा। फिल्म ' द कश्मीर फाइल्स ' में एगो डायलॉग बा, अउर बहुत पहिले प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक मार्क ट्वेन भी कहले बाड़ें कि '' साँच जब ले जूता पहिरेला, झूठ सँउसे दुनिया घूम के आ जाला ''

हसीब सोज के एगो शेर बा –

यहाँ मजबूत से मजबूत लोहा टूट जाता है
कई झूठे इकठ्ठे हों, तो सच्चा टूट जाता है

बाकिर जेकरा तूफान में दिया जरावे के बा, जेकरा आकाश में जोन्ही लेखा चमके के बा, ओकरा खातिर हमार एगो मुक्तक बा–

वक्त के ताप रहहीं के बाटे
बर्फ से भाप बनहीं के बाटे
चाँद–सूरज बने के जो मन बा
तब त गरहन के सहहीं के बाटे

एह से कुकुरन के फिकिर नइखे करे के। हम हमेशा कहेनी आ ओकर पालनो करेनी कि कुकुरन के पाछा के धाईं, कउअन के पाछा के उधियाईं, बढ़िया बा कि आपने राह धइले जाईं!

असहूँ फल से लदरल गाछ पर त ढेला चलते रहेला। सफल, लोकप्रिय आ तेज–तर्रार आदमी का पाछा त कुक्कुर लागले रहेलन स। तबो, जेकरा रचे के बा ऊ धार के खिलाफो चल के रचिए लेला– एगो इतिहास, जवन समय के पीठ पर अइसे टँका जाला कि विरोधियो ओकरा काम के, ओकरा नाम के नकार ना पावेलें। ई काम के ताकत ह साहेब!

खैर, बात जब कुकुरन के होता त रउरा त जानते बानी कि लोग अपना–अपना घर से ओकनी के रोटी, सगौती आ हड्डी खियावेला। भले ऊ ओह घर चाहे गाँव खातिर वाफादार होखेसन भा ना। कुछ वफादार होखबो करेलन स। चोर भा डाकू के आवे के सबसे पहिला भनक ओकनिए के लागेला आ ऊ चोर राम के गाँव के सिवान हेलाइए के दम लेलन स। जेकरा घर–दुआर में कुकुरन के डेरा ना होखेला, ओकरा घरे सेन्ह लागे में देरियो ना लागे। जब चोर बटालियन कवनो गाँव में चोरी के अंजाम देबे के योजना बनावेला त ओकरा एक्शन प्लान में गाँव के कुकुरन से निपटे के फुलप्रूफ प्लान जरूर रखे के पड़ेला।

समय के साथे कुकुर भी आदमी के इयार बनत गइलें। अपना इहाँ जानवर के पालतू बनावे के प्रचलन बहुत पुरान बा। आदि काल से लोग गाय भइंस, बकरी, मुर्गी त पलबे करेला, कुकुरो पालेला। हालांकि पश्चिम में कुकुरन के पेट बनावे के आ ओकरा के सवख बनावे के सिलसिला भी पुरान बा। बाकिर ओकर बाजारीकरण बाद में भइल। जब विश्व भर के कुकुरन के ब्रीड के संकर करके नया ब्रीड बनावे जाए लागल, जब एक देश के कुकुर दोसरा देश के भी जलवायु में रहे के अभ्यस्त होखे लगलन स, तब पेट बिजनेस में बहुत इजाफा भइल। आजकल कुकुर आ बिलाई के पालतू बनावे के सबसे ज्यादा प्रचलन बा। एगो वेबसाईट के आंकड़ा के अनुसार भारत में पालतू कुकुरन के संख्या 1 करोड़ से ऊपर बा जबकि अमेरिका में 6 करोड़ से ज्यादा कुक्कुर पालतू जानवर के रूप में बाड़ेसन। हालांकि ई ऊ आंकड़ा ह जवन रजिस्टर्ड बा। भारत में त अइसन असंख्य गाँव बा जहां सड़क पर रहे वाला कुकुर बिना कवनो पट्टा के एगो घर के ना बल्कि

पूरा टोला, मोहल्ला भा गाँव भर के पोसुआ बाड़े सन।

आज पोसुआ कुकुरन पर बात होत बा त आईं कुछ फिल्मन के बात कइल जाय जवन कुकुरन के इर्द–गिर्द बुनल कहानी पर बनल बा भा जवना के कहानी में कुकुर के महत्वपूर्ण रोल बा।

तेरी मेहरबानियाँ

जैकी श्रॉफ के ई फिल्म बड़ा प्रसिद्ध बा। एकर टाइटल ट्रैक त लगभग सभे गुनग. ुनवले होई। एह फिल्म के कहानी मोती नाम के कुक्कुर के ऊपर ही केंद्रित बा। फिल्म के हीरो राम आ ओकरा प्रेमिका के मर्डर हो जात बा। ओकर बचपन के साथी मोती अपना दोस्त के मौत के बदला ओकरा हर एक हत्यारा के जान से मार के लेत बा। अंत में ऊ अपना दोस्त के समाधि पर भी जाता आ अपना दोस्त के हत्या के गुत्थी सुलझावे खातिर पुलिस के सुराग भी देत बा।

सच्चा झूठा

राजेश खन्ना के फिल्म सच्चा झूठा 70 के दशक के हिट फिल्म रहल। एह फिल्म में राजेश खन्ना के दू गो रोल बा। भोला अपना बहिन के बियाह खातिर रुपया कमाए के चाहत बा आ ओकर हमशक्ल रंजित लूट करे में ओकर फायदा उठावत बा। भोला के दोस्त मोती यानि एगो वफादार कुकुर ही कोर्ट में गवाही देके ओकर बेगुनाही साबित करत बा। मोती भोला के दिव्यांग बहिन के जान भी बचावत बा। ई फिल्म बतावत बा कि इंसान के जीवन में कुकुर के भूमिका केतना महत्वपूर्ण बा।

हम आपके हैं कौन

एह फिल्म में कुकुर टफी सभके इयाद होई। हम आपके हैं कौन त बूझी घर–घर में चले वाला फिल्म ह। एह में टफी अपना माल. किन के जान बचावे खातिर सबसे मदद मांगत बा, जब ऊ सीढ़ी से गिरल रहत बाड़ी। फेर क्लाइमैक्स के ऊ गुप्त चिट्ठी पहुंचावे वाला सीन कइसे भुलाइल जा सकेला, जे में पामिरेनीयन डॉग टफी के चलते ही दू गो प्रेमी मिलत बाड़ें।

एंटरटेनमेंट

अक्षय कुमार के ई फिल्म त पूरा एंटेरटेन्मेंट नाम के कुकुरे के इर्द–गिर्द घूमत बा। ई कुकुर के मा. लिक अपना वसीयत में सगरो प्रॉपर्टी एकरे नामे लिख गइल बाड़ें। पूरा फिल्म ओकर मालिकाना हक पावे के जद्दोजहद के बीच भइल कॉमेडी पर आधारित बा।

दे दना दन

अक्षय कुमार के ही कॉमेडी फिल्म रहे दे दना दन। एह फिल्म में ऊ आ उनके दोस्त बनल सुनील शेट्टी सिंगापुर में रहत बा लोग। माली हालत खराब बा बाकिर गर्लफ्रेंड के शौक पूरा करे के बा। एही चक्कर में ऊ एगो अमीर मालकिन के कुक्कुर मूलचंद जी के चोरा लेत बाड़ें। इहवें से फिल्म में कॉमेडी ऑफ एरर चालू होत बा।

सिपाही

निरहुआ के फिल्म आइल रहे सिपाही। एह फिल्म के लेखक रहलें कॉमेडियन मनोज टाइगर। फिल्म में निरहुआ एगो सिपाही रहत बाड़ें अउरी उनके पोस्टिंग फील्ड में ना होके पुलिस अधिकारी के आवास पर रहत बा। उहाँ बेचारु मन मार के अधिकारी के बहिन के कुकुर घुमावत बाड़ें। घरे उनके माई अपना बेटा के बहादुरी के कथा कहत बाड़ी आ बेचारा लइका इहाँ कुकुर घुमावत बा। एह फिल्म में भी कॉमेडी के तड़का बा।

चार्ली 777

कन्नड के स्टार रक्षित शेट्टी के फिल्म चार्ली 777 रिलीज हो रहल बा। एह फिल्म में धर्मा एगो नि. राश आ जीवन से हताश हो चुकल आदमी बा जेकरा जीवन में कुछुओ बढ़िया नइखे होत। अचानक एगो अनाथ भइल कुकुर ओकरा से भेंटा जात बा आ ओकरा के तंग करे लागत बा। ऊ त पहिले कुकुर से पीछा छोड़ावे के चाहत बा, बाकिर बाद में ओकरे में जीवन के उल्लास ढूंढ लेता। एगो घटना में ऊ कुक्कुर बर्फीला अंधड़ में बिला जाता। धर्मा ओकरा के खोजे खातिर का का करत बा, इहे फिल्म के क्लाइमैक्स बा। फिल्म के ट्रेलर त धमाकेदार बा।

जॉन विक

अंडरवर्ल्ड के एगो खूंखार किलर जॉन विक आपन हत्या के धंधा छोड़ के शांति से जीए के चाहत बा। अचानक ओकरा पत्नी के मृत्यु हो जात बा आ ऊ जात जात अपना पति खातिर एगो पपी ऑर्डर कर देले रहत बिया। जॉन विक अपना पत्नी के इयाद में ओह कुकुर के बच्चा के दुलारत बा। बाकिर ओकरा घर पर भइल गैंग वार में ऊ कुकुर मर जात बा। जॉन विक ना चाहते हुए भी ओह कुकुर के मौत के बदला लेबे मैदान में आ जात बा अउरी फेर से आपन पुरान दुश्मन, दोस्त आ ओही अन्डरवर्ल्ड से ओकर सामना होत बा।

हाचिको मोनोगतारी

कुकुर के लेके बनल फिल्मन में ई एगो दमदार आ भावुक फिल्म बा। एकर कहानी साँच घटना पर आधारित बा। जापान में ई फिल्म बनल अउरी उहवें के एगो प्रोफेसर आ उनका कुकुर पर आधारित ई फिल्म बा। एगो अकीता ब्रीड के कुकुर हाचिको अपना प्रोफेसर मालिक से एतना जुड़ जात बा कि ऊ उनका कॉलेज गइला के बाद स्टेशन पर उनका आवे के टाइम इंतजार करत बा। एक दिन ऊ प्रोफेसर कॉलेज में ही लेक्चर देत मर जात बाड़ें। बेचारा कुकुर इहे सोचत बा कि ओकर मालिक सांझी खान अइहें त ऊ साथे लवटी। ओकरा के प्रोफेसर के मेहरारू खूब मनावे के कोशिश करत बाड़ी बाकिर ऊ नइखे मानत। अपना मालिक के मरला के दस बरिस ले ऊ ओही स्टेशन पर रोज उनकर इंतजार करत बा, ओह दिन ले जबले कि ओकर मृत्यु नइखे हो जात। ई साँच घटना ह अउरी आज भी ओह शिबूया स्टेशन पर हाचिको के मूर्ति ओकरा वफादारी के निशानी के रूप में स्थित बा।

कुक्कुर

उज्ज्वल पांडेय निर्देशित निरहुआ के पहिला शॉर्ट फिल्म ह 'कुक्कुर'। आरोहण फिल्म्स के एह अति संवेदनशील प्रस्तुति में देखावल गइल बा कि माई के हालत त कुकुरो से बदतर बा। माई के उपेक्षा आ अनादर के मार्मिक चित्र बा। बेटा अपना भुलाइल कुक्कुर के खोजत बा जवन ओकरा ओही वृद्धाश्रम में मिलत बा जहां ओकर माई बाड़ी। कुक्कुर के मिलला के खुशी में बउराइल बेटा माई के हालो नइखे पूछत। मारक व्यंग्य बा। कान्सेप्ट आ लेखन खुद निर्देशक उज्ज्वल पांडेय के बा। 5 मिनट के एह लघु फिल्म में शुरू से अंत तक एगो गीत (गजल) गूँजत बा – *हजारो गम में रहेले माई /तबो ना कुछुओ कहेले माई।* मनोज भावुक के लिखल ई गीत शैलेन्द्र मिश्रा के कर्णप्रिय आवाज में बा। लोग कहत बा कि ई गीत एह लघु फिल्म के जान बा। फिल्म में लीड रोल दिनेश लाल यादव निरहुआ के बा। सेकेंड लीड हर्षित पांडेय के बा आ माई के रोल में ललिता देवी बाड़ी।

त कुकुरन से उलझे के नइखे। ओकनी के पोसुआ बनावे के बा। पुचकारे–चुचकारे के बा। समझावे–बुझावे के बा। अकिल आइल त ठीक ना त पागल आ आक्रामक कुक्कुरन के गोली मारे के कानूनी प्रावधान त बड़ले बा।

❑❑

❍ मनोज भावुक भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, अचीवर्स जंक्शन के निदेशक, टीवी पत्रकार आ सुप्रसिद्ध कवि हईं।)

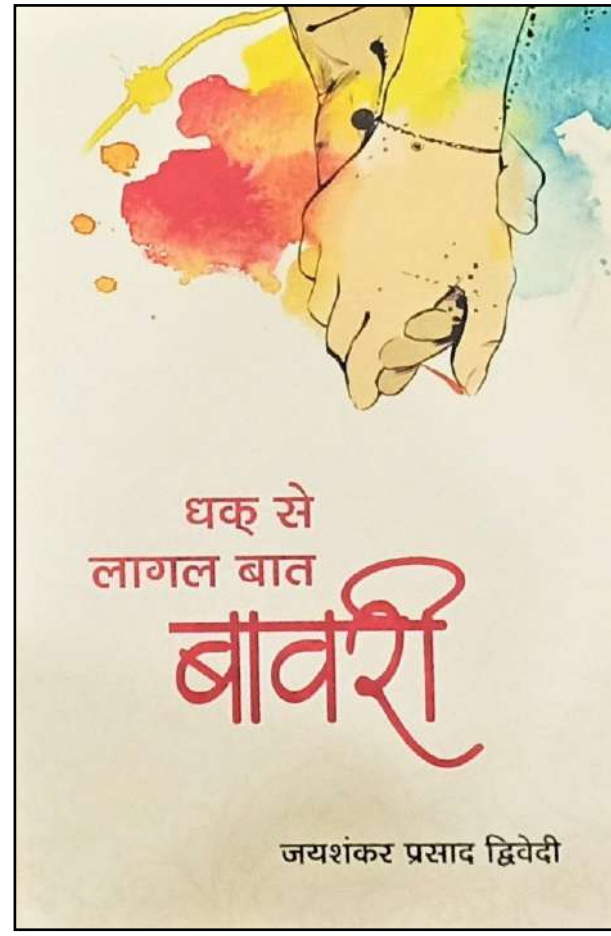

साँस साँस में बाँस

केशव मोहन पाण्डेय

हमार टोला तऽ रहे नन्हींचुक बाकीर संपन्न्ता से परिपूर्ण। पक्का मकान के नाम पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय के दूगो कमरा बाद में बनल। ओकरा बाद सबके घर बाँस, खर, कोईन, बाती के। माने सगरो गाँव फूस के। तऽ सबके घर खातीर सबसे बड़का धन बाँस आ खर रहे। टोला में घरन के ईऽ दशा अभाव के कारण कम, बाढ़ आ व्यवस्था के कारण अधिक रहे। माने हमरा आजुओ लागेला कि सबके मन के कवनो कोना में ईऽ भय जरूर पइसल रहे कि कबो–ना–कबो गंडक के प्रकोप बढ़ सकेला आ घर, टोला, संपत्ति उनका पेट में समाऽ सकेला।

टोला में अभाव आ कमी के कारण ईहो रहे कि भले हमरा होश संभलला ले सभे भाई लोग आपस में पट्टीदार हो गइल रहे लोग, सगरो रिश्ता–नाता के बँटवारा हो गइल रहे, बाकीर सबके घर में केहू–ना–केहू सरकारी नौकरी में जरूर रहे। भले ओह बेरा वेतन कौड़ी के तीन आना मिलत रहे बाकीर नौकरी से संपन्नता रहे। तबो सभे ईटा जोड़ला से अच्छा खंभा–थुन्हीं सीधा करवावल बुझे। ओह खातिर सबसे पहिलका आवश्यक चीज बाँस रहे।

हमरा टोला के पुरूब से भंडार कोना ले तीन–चार गो बड़का–बड़का बँसवार रहे। ओहमे सबसे बड़का हमनी के बँसवार। करीब अढ़ाई–तीन सौ कोठ रहे। हिस्सेदार पाँच जने। बड़ा घन–घन कोठ। मजबूत बाँसन के कोठ। ओकरा पुरूबो, बहेलिया डोभ के लगहूँ बँसवार रहे। ओह बँसवार में से घर छावे खातीर डाभियो (पातर बारीक खर) कटाऽ जाव। भंडार कोना के बाँसन के शुरूआत करइन के पेड़ के लग्गे से हो खे। फेर चमटोली के बँसवार। अहीरटोली तऽ पूरा बँसवारे में बसल रहे। सबके घर के इगुवारे–पिछुवारे एकाध गो कोठ मिलिए जाव। बीरबल भाई के दुआर के बँसवार से ले के अली टोला ले, बंधा के लग्गे ले, खाली बाँसे–बाँस।

भुग्तभोगी आदमी अपने चादर से पैर तोपे के कला में माहीर होले। जवन व्यवस्था रहे, टोला भर के लोग ओही में गुजारा करे के अभ्यस्त रहे। आगे बढ़े खातिर प्रयासरतो रहे। घर छवावे खातीर सहजता से सबके बाँस मिलिए जाव। पइसा ना रहला पर बँसवे देऽ के खरो खरीदा जाव।

समय के फेरा के कारण अगर कबो डेहरी के अनाज खतम हो जाव आ हाँड़ी पर परई चढ़ावे खातिर दोसर कवनो बहाना ना मिले तऽ दू–चार गो बँसवे बेंच के मोहन तिवारी चाहे गिरधारी के दोकान में पहुँचल जाव। हमरा ईहो ईयाद बाऽ कि जब इंटर में हमके दस किलो–मीटर पढ़े जाए के पड़ल तऽ साइकिल के जरूरत पड़ल। तीन–चार महिना तऽ पैदले धांग देहले रहनी, बाकीर लइका के जीव, हार जाईं। बाबुजी अनुभवो कइले, हम कहबो कइनी। अपना बेंवत भर बाबुजी के कवनो सेकेंड हेंड साइकिल ना मिले। मिलल तऽ पूरा पइसा नाऽ। . . . खैर, सुतार ई बइठल कि साइकिल वाला के बाँस के जरूरत रहे। पटरी बइठ गइल। बात बन गइल। ओही बाँस के कारण हमरा बासे पहिलकी साइकिल चढ़ल।

हमरा टोला में लगभग सबके घरे बँसवारे के कारण घर छवा जाव। थून्हीं सोंझ हो जाव। टाट–बेड़ सुधर जाव। गरज पड़ला पर बँसवे के पाटी वाला खटीयो तैयार हो जाव। सूखला पर कोईन लवना के कामे आ जाव। झमड़ा बन जाव। बँसवे कबो–कबो रोटीओ के व्यवस्था कऽ दे। जाड़ा में ओही बाँस के पतई आ कोंपड़ बिन के घूरा के टीला तैयार होखे। टाँगी के चोट से बाँस के खुत्था निकाल के बाबूजी के निरंतर जरे वाला धुईं तैयार होखे। ओह धुईं के कारन दालान में चहलकदमी बनल रहे।

एतने ना, हमरा बँसवार में चाभ वाला बाँस के एगो कोठ रहे। ओह बाँस के उपयोग खाली धरम–करम में हो खे। केहू के अपना अंगना में ध्वजा फेरे के होखे तऽ चाभ के बाँस कटा जाव। केहू के घरे माड़ो छावे के बा तऽ चाभ के बाँस कटा जाव। कई लोग ओकरा खातिर पइसो दे। बाबूजी दसोनोह जोड़ लें। पइसा पर तऽ ढेर बँसवार बाऽ। चाभ के बाँस खतीर पइसा ना। पूजा के बात बा तऽ कबो हमरो गरज पड़ला पर चूका दिहऽ। ई सुन के लोग के हृदय हुलास से भर जाव। रोंआ आशीष

बरसावे।

अब बड़ भइला पर जाति–धरम, छोट–बड़ के ढेर भेद बुझाताऽ। हमरा टोला में बाभन लेग के अधिकता रहे बाकिर ई अछोप कम घेरले रहे। हमरा टोला में मुसलमान के नाम पर खाली बलिस्टर भाई के परिवार रहे जे खाली अंसारी उपनाम से बुझासऽ। अउरी उठल–बदठल, पनिल–ओढल कहीं कुछ विशेष ना लागे। हँऽ तऽ जब तजिया बनावे के बात होखे तऽ सबसे ढेर हमरे टोला से बाँस दिहल जाव। पूरा श्रद्धा भाव से। एकदम बिना पइसा के। धरम–नेम खातिर पइसा लिहल पाप मानल जाव। ओह बेरा हमरा टोला के समरसता बढ़ावे में बँसवार के अहम भूमिका रहे।

बरसात के मौसम में जब कबो झपसा के लड़ी लाग जाव तऽ दिक्कत तऽ सबके होखे, बाकीर सबसे अधिका दिक्कत माल–गोरुन के होखे। गेहूँ के भूसा कबले रूची? हर जीव जीभ के स्वाद बदलत रहे के चाहेला। खेतन में किनारे–किनारे धरीआवल साहेबनवा बाजरा अभीन धरती छोड़लहीं रहेला कि बरसात मुड़ी पर आ चढ़ेला। अभीन धरती छोड़त बाजरा पर हँसुआ चलावला से का फायदा। एह विचार से हरिहरी के ओह अकाल में हम हजार बेर देखले बानी कि बाँस के पुँलगी नीचे कऽ के चाहे ओही पर चढ़ के लोग ओकर पतई तुरे। पतई के लुँड़ी बना–बना के जमा कऽ लिहल जाव। ओकर छाँटी काट के नाद बोझाव तऽ गोरूअन के नाद से मुँहे ना उठे।

केहू के कोठ में अगर कवनो पातर, छरहर, गँठल बाँस निकलल तऽ ओहपर सबके आँख गड़ल रहेला। कोंपड़ तऽ कवनो काम के ना होला, बाकीर कम–से–कम एक–डेढ़ साल के हो गइला पर ओकर बड़ा गंभीर लाठी बनेला। अइसन बाँस खातीर चोरीओ–चमारी मान्य रहेला। नागू आ महावीर काका घरे हम कई बेर बाँस में लाठी के संस्कार देत देखलहूँ बानी। बड़ा पसंद से, बड़ा मेहनत सेऽ लाठी बनावल जाला। लागेला कि ओह बाँस के नवका अवतार में ध ीरे–धीरे ताकत के संस्कार दिहल जात होखे। एक–एक गिरह के चाकू से चिकन कइल जाला। कड़ू के तेल लगा–लगा के कई दिन ले ओहके गोईंठा के मद्धिम आँच पर पकावल जाला। दूध दूहला के बाद जवन काँच माखन निकलेला, ओ के निर्माण होत लठिया में लाहे–लाहे पिआवल जाला। अइसने प्रक्रिया बेर–बेर कइल जाला। कई दिन, कई हप्ता, कई महिना ले ई करतब चलेला। लागेला कि मक्खन लगा के खून निकाले के गुन भरल जाला ओहमे।

टोला में बाँस के अधिकता, फूस के घर के अधि ाकता, खर–खरबाना के अधिकता, बेहाया आ करवन आदि के झाड़–झंखाड़ के अधिकता के कारण कीड़ा–फतिंगा के अधिकता रहेला। ओह कीड़ा–फतिंगन खातिरो सबके घर में लगभग दू–चार गो लाठी–लउर मिलिए जाई।

हमरा टोला में एकाध घर छोड़ के महावीर काका जइसन लाल ठार लाठी तऽ ना मिलेला, बाकीर कवनो रूप में उपस्थित जरूर रहेला। हमरा बाबूजी के सबसे प्रिय लाठी चार साल पहीले ले रहल हऽ। कठबँसिया के लाठी रहे ऊ। दिल्ली में कठबँसिया ढेर लउकेला। लउकेला तऽ बाबूजी के ऊ लाठी ईयाद आ जाला।

टोला के शायदे कवनो घर होई, जेकरा घरे लबदी ना होई। मुँगड़ी ना होई। लाठीए के रूप कहीं या पर्यायवाची, लउर, डंडा, लबदा, झटहा, सटहा, पैना, छिंऊकी, मुँगड़ी आदि हऽ बाकीर सबके गुन आ आकृति अलग–अलग हऽ। हमहूँ कई बेर छतुअनिया तर के बइर तूरे खातीर चाहें करवनवा तर के सेनुरिया आम गिरावे खातीर झटहा के सफल उपयोग के अनुभव र खले बानी। वइसे हमरे कुनबा में लाठीयो के मजगर उपयोग देखे के मिलल बाऽ।

आज जब अपना टोला के बृहद् बँसवार के ईयाद करेनी तऽ पूरा टोला के ढाँचा साफ हो जाला। तब समझ में आवेला कि हमरा टोला खातिर, ओहके पहरेदारी में, रक्षक जइसन चारू ओर खड़ा बाँस के कोठन के का महत्त्व रहे। सबके आवास के सगरो अस्तित्व बँसवे से रहे। टाट के बाती होखे चाहें चार के रोके वाला थुन्हीं, बाँस अपना जोर से सबकुछ सलामत राखे। बाँसे के थुन्हीं। बाँसे के कोन्चड़। पसलौड़ो सोंझका–छरहर बँसवे के होखे। कई बेर जरूरत पड़ला पर दू गो बराबर आकार आ आकृति के बाँसन के जोड़ के लरहियों के काम निकालल जाव। हमरा टोला में सबके खातिर बाँस रहे तऽ आस रहे। घर के एक–एक चार में बाँस। एक–एक कोरो में बाँस। जब घर छवावे के काम लागे तऽ एक–एक बाँस से बाती बनवला के मिस्त्री लोग के कला देखत बने। दाब के मुठिया बाँस के। सहारा बनल मुँगड़ी बाँस के। दिनभर के काम खतम भइला के बाद खाना बनावे में चूल्ह बारे खातिर हलुका छिलका मजेदार जलावन के काम करे।

हमरा टोला के बँसवार के बाँस चाहे मोट–मजबूत होखे, चाहे फोफड़, सबसे अलग–अलग काम लिहल जाव। गुन आ बनावट के कारने काम के मर्यादा

निर्धारित कऽ दिहल जाव। कवनो सात टेढ़े–टेढ़ बाँस मिले तऽ ओहके काट के बड़का कलाकारी से दूऽफारा लगावल जाव। नीचे के ओर तनी नोकदार कऽ के चिकन कऽ दिहल जाव। चिकन करे खातिर दाब आ गड़ासी के सहारा लिहल जाव आ दँउरी आदि में उपयोग करे वाला खरदनी बना दिहल जाव।

हमरा टोला के सभे बाँस के अंग–अंग से काम लेबे में माहिर रहे। ऊँहा बाँस के हर अवतार के उपयोग होखे। जरूरत से समझौता आ उपलब्धता के उपयोग के उदाहरण बँसवार के सथवे हमरा टोला के सहजता में लउके। कोला–बारी के घेरा लगावे के होखे, चाहे इगुआरे–पिछुवारे पसरत फरहरीअन खातिर झमड़ा लगावे के बात, बाँस के कोईन, बाती, थुन्ही के अवतार मिलिए जाव। घोठा पर बँसवे के खूँटा आ बँसवे के बाती से बिनल नाद। लग्गी से लवना ले बाँसे–बाँस। लाठी–लउर से ले के लबदा–पैना ले बाँस। हमरा स्कूलो के निर्माण बँसवे से रहे। मास्टर साहेब के हाथ में बँसवे के छड़ी। हमरा टोला भर के हर पहचान में बाँस के भूमिका आज ईयाद अइला पर सोंचे के मजबूर कऽ देला। बितल बात ईयाद आ के आपन कइगो असर छोड़ जाला। ईयाद हँसी–खेल के। ईयाद अमरख–ईर्ष्या के।

हम कक्षा चौथा चाहें पाँचवा में पढ़त रहनीं। हमनी के चार–पाँच लइकन के झूंड रहे। आपस में खेल–कूद, लड़ाई–झगड़ा, सब होखे। ओहि तरे हमनी के बड़ दीदी लोग रहे। ऊहो लोग चार–पाँच जानी। ओहू लोग के पढ़ाई से सिलाई–कढ़ाई, रार–झगड़ा, सब सथवे होखे। अभाव भरल हमरा टोला के ईऽ सबसे बढ़का गुन रहे कि जँहवा ले विद्यालय के व्यवस्था रहे, लड़की लोग के भी शिक्षा के बराबर के अवसर दिहल जाव। बेहिचक। बेझिझक।

हँऽ तऽ एक बेर कवनो बात पर पार्वती दीदी से अनबन हो गइल रहे। ऊ बात साफ नइखे ईयाद कि अनबन केकरा से भइल रहे। हमरा से कि हमरा दीदी से। आऽ कि बँसवार के धन पर हमार घमंड रहे। भइल ई कि पार्वती दीदी हमरा दखिनही कोठ से हँसुआ से कोईन काटे के जिद्द करे लगली। हमहूँ जिदिआ के मना करे लगनी। ऊ हँसुआ बढ़वली तऽ हम ओकर धरवे पकड़ लेहनी। उनका लागल कि हम हँसुअवा छिनत बानी। ऊ अपना ओर खिंचली। ओही खींचखाँच में हमरा दहिना हथेली में एगो गहिरा चिरा लाग गइल। खून तऽ बाद में बहल, बाकीर चीराऽ देख के हम बउआ गइनी। भूँइया पटाऽ के चिलाए लगनी। बेचारी ऊहो देखली तऽ उनकर खून सूख गइल। पहिले तऽ लेमचूस के लालच दे केऽ चुप करावे के चहली, बाकीर दाल ना गलल तऽ पराऽ गइली। बाद में हमनी के महतारी लोग में नगदे भइल। एतने नाऽ, ऊ बेचारी बाँस के पोर पर के भूसी निकाल के लेअइली। कटलका पर लगा के कपड़ा से बान्ह दिहल गइल। घाव कुछ दिन ले रहे बाकीर चिन्हा आजुओ बाऽ। अब आज कहीं आपन चिन्ह लिखे के रहेला तऽ हम ऊहे लिखेनी – 'ए कट मार्क ऑन राइट पाम।' जब–जब लिखेनी, तब–तब ऊ घटना ईयाद आवेला। पार्वती दीदी ईयाद आवेली। वँसवार ईयाद आवेला। आ ईयाद आवेला ओह बँसवार के भौगोलिक स्थिति। दूनो ओर बेहया भरल गड़हा से घेराइल छवर ईयाद आवेला। ईयाद आवेला पूरा टोला। टोला के स्वरूप। ईर्ष्या। द्वेष। समरसता। अपनत्व। आ एह सब के बीच बँसवे के कोरो, थून्हीं, पँसलवड़ पर टँगाइल टोला के घर दुआर। बँसवे के पाटी–पउवा से तैयार खटिया। जीनगी से साथ देत बाँस आ अंतिम विदाई के बेरा वाहन बनत बाँस। ओह बाँस आ बँसवार के सथवे टोला से लोग के पलायन। अगलग्गी। घरन के स्वाहा भइल रूप। आ अंत में नदी के कटान में हमरा टोला के बँसवार के अंतिम समाधि।

आज सेवरही में सीमेंट–बालू–ईंट के घर तैयार था। एल.पी.जी. के कारन माटी के चूल्हा गायब बाऽ। प्रभु के परताप से हर प्रकार के सुख बाऽ। बाकीर सावन चाहें कवनो जग–परोजन में जब कबो ध्वजा फेरे खातिर बाँस के जरूरत पड़ेला, तऽ खरीदे के पड़ेला। तब हमरा टोला के चौकीदारी करत सगरो बँसवार के दृश्य बेर–बेर नजरी के सामने नाचे लागेला आ मन अधीर हो जाला।

❑❑

❍ उत्तम नगर, नई दिल्ली

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

अ अपनइत

(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)

अध्यक्ष : **सरोज त्यागी** संयोजक : **जे.पी. द्विवेदी**

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600 | चार बरिस : 2100 | आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299
IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।